हिन्दी दैनिक

R.N.I.NO.UPHIN/2014/59804

प्रयाग दर्पण

वर्ष : 08 | अंक : 139 | प्रयागराज, रविवार 28 अगस्त , 2022 | हिन्दी दैनिक | पृष्ठ–4 | मूल्य : 2 रुपया

पीएम मोदी की अगुआई में देश नया भारत बनने की ओर अग्रसर : योगी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आज जनपद मेरठ में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के नेता सुभाष चन्द्र बोस प्रेक्षागश्ह में मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना के 312 छात्र–छात्राओं को टैबलेट एवं स्वामी विवेकानन्द युवा सशक्तिकरण योजना के 700 छात्र–छात्राओं को स्मार्टफोन वितरित किए तथा भू–स्वामित्व योजना के 200 लाभार्थियों को घरौनी वितरित कीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतश्त्व एवं मार्गदर्शन में विगत 08 वर्ष में देश एक नया भारत बनने की ओर अग्रसर है। प्रधानमंत्री ने 08 वर्ष पूर्व जो संकल्प लिए थे, वर्तमान में उनके चमत्कारिक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। केन्द्र सरकारी योजनाओ का लाभ डीबीटी के माध्यम से लाभार्थियों के खाते में पहुंच रहा है, यह चमत्कार डिजिटल इण्डिया के कारण सम्भव हुआ है। उन्होंने कहा कि समाज के हर तबके को शासन की योजनाओं का लाभ बिना भेदभाव के प्राप्त हो रहा है। देश ने हर क्षेत्र में विकास की एक नई गाथा लिखी है। स्टार्ट–अप योजना, स्टैण्ड–अप योजना, डिजिटल इण्डिया, प्रधानमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, मेक इन इण्डिया, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, स्वच्छ भारत मिशन, प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी एवं ग्रामीण, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री मातश् वंदना योजना, जननी सुरक्षा योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि तथा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जैसी विभिन्न योजनाएं गांव, गरीब, किसान, नौजवान, महिला, उद्यमी इत्यादि के लिए खुशहाली का आधार बनी हैं। देशवासियों ने शासन की योजनाओं को डीबीटी के माध्यम से हर पात्र व्यक्ति तक पहुंचते हुए देखा है। डिजिटल इण्डिया का लाभ समाज के प्रत्येक तबके को मिल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह हम सबके लिए सौभाग्य की बात है कि आज पूरा देश प्रधानमंत्री के नेतश्त्व में आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। प्रधानमंत्री ने आजादी के शताब्दी महोत्सव के लिए देशवासियों के समक्ष आगामी 25 वर्षों के लिए व्यापक कार्ययोजना रखी है। देश को गरीबी, असमानता, विषमता से दूर रखने और सशक्त एवं सामर्थ्यवान बनाने तथा विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने के लिए हम सभी को मिलकर कार्य करना होगा।

गुरु की भूमिका में नजर आए योगी

लखनऊ । मेरठ में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के नेताजी सुभाष चंद्र बोस प्रेक्षागश्ह में छात्र–छात्राओं को स्मार्टफोन–टैबलेट वितरित करने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गुरु की भूमिका में नजर आए। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के नेताजी सुभाष चंद्र बोस प्रेक्षागश्ह में छात्र–छात्राओं को स्मार्टफोन–टैबलेट वितरित करने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गुरु की भूमिका में नजर आए। करीब 40 मिनट के संबोधन में उन्होंने कहा कि मेरठ को भूल गए तो देश का इतिहास डगमगा जाएगा।

शराब घोटाले में एमसीडी-डीडीए की भूमिका की भी हो जांच : कांग्रेस

नई दिल्ली। कांग्रेस ने दिल्ली के शराब घोटाले को हजारों करोड़ रुपए का भ्रष्टाचार बताते हुए शनिवार को कहा कि इस मामले में पिछले दो महीने से मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और आबकारी मंत्री मनीष सिसोदिया इधर उधर की बातें खूब कर रहे हैं लेकिन घोटाले को लेकर पूछे गए सवालों पर चुप्पी साधे हुए हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता अजय माकन ने यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि केंद्रीय जांच ब्यूरो को इस मामले में सिसोदिया की गहराई से जांच पड़ताल करने के साथ ही दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) और दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) की भूमिका की भी जांच करनी चाहिए। उनका कहना था कि जब दिल्ली में शराब की दुकानें खुल रही थीं तो डीडीए तथा एमसीडी ने इस मामले में कार्रवाई क्यों नहीं की। प्रवक्ता ने कहा कि आप दो महत्वपूर्ण मुद्दों स्वराज लाने और भ्रष्टाचार मिटाने को लेकर के सत्ता में आई लेकिन दिल्ली के रिहायशी इलाकों में शराब की दुकानें खोलकर उन्होंने अपने इन दोनों बुनियादी बातों को तार–तार कर दिया।

देश में कोरोना वायरस संक्रमण के 9,520 नए मामले आए

नई दिल्ली। भारत में पिछले 24 घंटे में कोरोना वायरस संक्रमण के 9,520 नए मामले सामने आने से देश में संक्रमितों की संख्या बढ़कर 4,43,98,696 हो गई, जबकि उपचाराधीन मरीजों की संख्या घटकर 87,311 रह गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के शनिवार सुबह आठ बजे जारी अद्यतन आंकड़ों के अनुसार, देश में संक्रमण से 41 और लोगों की मौत होने के बाद मृतक संख्या बढ़कर 5,27,597 पर पहुंच गई। इन 41 मृतकों में वे चार लोग भी शामिल हैं, जिनके नाम केरल ने कोविड–19 से मौत के आंकड़ों का पुनरू मिलान करते हुए संक्रमण से जान गंवाने वाले लोगों की सूची में डाले हैं। आंकड़ों के मुताबिक, देश में कोविड–19 के उपचाराधीन मरीजों की संख्या घटकर 87,311 रह गई है, जो कुल मामलों का 0.20 प्रतिशत है। पिछले 24 घंटे में उपचाराधीन मरीजों की संख्या में 3,396 की कमी दर्ज की गई है। वहीं, मरीजों के ठीक होने की राष्ट्रीय दर बढ़कर 98.62 प्रतिशत हो गई है। अद्यतन आंकड़ों के अनुसार, दैनिक संक्रमण दर 2.50 प्रतिशत, जबकि साप्ताहिक संक्रमण दर 2.80 प्रतिशत है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि अब तक 4,37,83,788 कोविड–19 से उबर चुके हैं, जबकि संक्रमण से मौत की दर 1.19 प्रतिशत है। देश में अब तक कोविड–19 टीके की 211.91 करोड़ खुराक दी जा चुकी हैं। आंकड़ों के मुताबिक, देश में पिछले 24 घंटे में संक्रमण से जिन लोगों की मौत हुई, उनमें हरियाणा के छह, महाराष्ट्र और पंजाब के चार–चार, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान और पश्चिम बंगाल के तीन–तीन, दिल्ली, गुजरात और ओडिशा के दो–दो तथा चंडीगढ़, गोवा, जम्मू–कश्मीर, मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश का एक–एक मरीज शामिल है। गौरतलब है कि देश में सात अगस्त 2020 को संक्रमितों की संख्या 20 लाख, 23 अगस्त 2020 को 30 लाख और पांच सितंबर 2020 को 40 लाख से अधिक हो गई थी। संक्रमण के कुल मामले 16 सितंबर 2020 को 50 लाख, 28 सितंबर 2020 को 60 लाख, 11 अक्टूबर 2020 को 70 लाख, 29 अक्टूबर 2020 को 80 लाख और 20 नवंबर को 90 लाख के पार चले गए थे।

केजरीवाल का दावा, भाजपा ने अन्य दलों की सरकारें गिराने पर खर्च किए 6300 करोड़

'आपके सरकारी स्कूल देखने कब आऊं- केजरीवाल ने हिमंत विश्व शर्मा से पूछा

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उनके असम के समकक्ष के बीच ट्विटर पर जारी जंग शनिवार को भी जारी रही। केजरीवाल ने हिमंत विश्व शर्मा से पूछा कि बताइये असम के स्कूलों को देखने कब आना है। डिजिटल मंच पर दोनों नेताओं के बीच बहस बुधवार को तब शुरू हुई थी जब केजरीवाल ने ट्वीट किया कि स्कूल बंद करना कोई समाधान नहीं है तथा देश में और स्कूल खोलने की जरूरत है। इसके साथ ही उन्होंने असम में कुछ स्कूलों को ''बंद किये जाने का दावा करने वाली एक खबर साझा की।

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शनिवार को दावा किया कि अगर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने देश में अन्य दलों की सरकारें गिराने पर 6,300 करोड़ रुपये खर्च नहीं किए होते तो केंद्र सरकार को खाद्य सामग्री पर वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) नहीं लगाना पड़ता। केजरीवाल ने एक दिन पहले भाजपा को "राज्य सरकारों की सीरीयल किलर" कहा था। दिल्ली विधानसभा में अपने संबोधन के दौरान केजरीवाल ने यह आरोप भी लगाया कि भाजपा पेट्रोल और डीजल की मूलयवृद्धि और जीएसटी के जरिये एकत्र किए गए पैसों से विधायकों को खरीद रही है। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक ने शनिवार को कहा कि लोग महंगाई से परेशान हैं और भाजपा करोड़ों रुपये खर्च कर अन्य दलों के विधायकों को खरीद रही है तथा राज्यों में सरकारें गिरा रही है। केजरीवाल ने ट्वीट किया, "दही, छाछ, शहद, गेहूं, चावल आदि पर अभी जो जीएसटी लगाया गया, उससे केंद्र सरकार के पास सालाना 7,500 करोड़ रुपये आएंगे। सरकारें गिराने पर अभी तक इन्होंने 6,300 करोड़ रुपये खर्च किए हैं। अगर ये सरकारें न गिराते तो गेहूं, चावल, छाछ आदि पर जीएसटी न लगाना पड़ता। लोगों को महंगाई का सामना न करना पड़ता।" आबकारी नीति लागू करने में कथित अनियमितताओं के चलते केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और अन्य के खिलाफ मामला दर्ज करने के बाद से 'आप और भाजपा के बीच राजनीतिक खींचतान बढ़ गई है।

रोहिणी में दिल्ली पुलिस और बदमाशों के बीच मुठभेड़

नई दिल्ली। दिल्ली के रोहिणी जिले में स्थित प्रेम नगर थाना पुलिस ने पशु की हत्या में शामिल बदमाशों को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया है। पुलिस के मुताबिक, आरोपियों में शामिल रहमान, उस्मान और आलम शाह ने पुलिस टीम पर दो राउंड फायरिंग की।

इसके बाद पुलिस की जवाबी फायरिंग में रहमान को गोली लगी है, पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर उपचार के लिए अस्पताल भेज दिया है। पुलिस के मुताबिक, आरोपियों के पास से 1 पिस्तौल, 4 जिंदा कारतूस, एक कार, एक स्कूटी, इंजेक्शन, रस्सी और जानवर काटने का चॉपर बरामद किया गया है, फिलहाल आरोपियों से पूछताछ चल रही है।

रोहिणी जिले की पुलिस ने बताया कि बीते दिनों जिले में हुई गोवंश की हत्या में शामिल लोगों के शुक्रवार देर रात भाग्यविहार आने की सूचना मिली। एसीपी रोहिणी के दिशानिर्देश पर एसएचओ रोहिणी नॉर्थ भूपेश की टीम ने आरोपियों को पकड़ने के लिए भाग्यविहार छठ पूजा मैदान के पास ट्रैप लगाया।

गुलाम नबी के दिल्ली आवास मिलने पहुंचे समर्थक, पार्टी बनाने को लेकर चर्चा हुई तेज

नई दिल्ली। कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा देने के बाद गुलाम नबी आजाद की जम्मू–कश्मीर में नई पार्टी बनाने को लेकर चर्चा जोरों पर है, जिसको लेकर उनके तमाम समर्थक उनसे मुलाकात करने उनके दिल्ली स्थित आवास पर पहुंच रहे हैं। जम्मू–कश्मीर के नेता अमीन भट्ट गुलाब नबी आजाद से मुलाकात की है, वहीं उन्होंने यह भी कहा है कि कई अन्य नेता गुलाम नबी आजाद से मुलाकात करने पहुंचेंगे और अपना समर्थन देंगे। अमीन भट्ट ने कहा, गुलाम नबी आजाद से मुलाकात के बाद हम लोग आगे की रणनीति तय करेंगे, अजाद साहब ने 5 पन्नों में अपना दुख व्यक्त किया है। मैं दो बार विधायक रहा हूं, यूथ कांग्रेस का अध्यक्ष भी रहा हूं, मैं भी आजाद साहब के हित में इस्तीफा दे रहा हूं। जम्मू–कश्मीर में आजाद साहब ने कई सालों बाद बंजर जमीन पर हुकूमत बनाई थी। जहां–जहां कांग्रेस की जमीन बंजर थी, वहां पर आजाद साहब ने कांग्रेस की सरकार बनवाई। अब वह कांग्रेस से अलग हो चुके हैं, अब जम्मू–कश्मीर में अगला मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद होंगे, वहां के कई विधायक और लोग आजाद के साथ हैं। गुलाम नबी आजाद ने शुक्रवार को अपने त्यागपत्र में पार्टी को कमजोर हालत में पहुंचाने के लिए राहुल गांधी को जिम्मेदार ठहराते हुए आरोप लगाया था कि अध्यक्ष पद के लिए वह ऐसे व्यक्ति को चुनेंगे, जो सिर्फ कठपुतली बनकर रहे और पर्दे के पीछे सारे निर्णय वह खुद ही लेंगे। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि 2020 में पार्टी में सुधार की मांग करने वाले जी–23 नेताओं को कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में गाली दी गई, अपमानित किया गया और बदनाम किया गया। अपने त्यागपत्र में उन्होंने कहा, दुर्भाग्य से, कांग्रेस पार्टी में स्थिति ऐसी हो गई है कि अब पार्टी का नेतृत्व संभालने के लिए प्रॉक्सी का सहारा लिया जा रहा है। यह प्रयोग निश्चित रूप से विफल होगा। पार्टी इस तरह बर्बाद हो गई है कि स्थिति अ हाथ से निकल गई है। इसके अलावा, श्चुना हुआ अध्यक्षश एक कठपुतली से ज्यादा कुछ नहीं होगा। उन्होंने राहुल गांधी का नाम लिए बिना आरोप लगाया, ष्यह सब इसलिए हुआ, क्योंकि पिछले आठ वर्षो में पार्टी नेतृत्व ने शीर्ष पर एक गैर–गंभीर व्यक्ति को बिठाने की कोशिश की।

भारतीय नौसेना को मिला पहला स्वदेशी गोला-बारूद

मुंबई। भारतीय नौसेना पहली बार एक प्राइवेट कंपनी द्वारा निर्मित 100 प्रतिशत स्वदेशी 30 मिमी हाई विस्फोटक बंदूक गोला बारूद का उपयोग करेगी। अधिकारियों ने यह जानकारी शनिवार को दी। गोला–बारूद का उत्पादन सोलर ग्रुप की नागपुर की इकोनॉमिक एक्सप्लोसिव्स लिमिटेड द्वारा किया गया है, जिसे भंडारा ऑर्डनेंस फैक्ट्री के प्रणोदक स्रोतों के साथ 12 महीनों के भीतर परीक्षण और वितरित किया गया था। सोलर ग्रुप के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक सत्यनारायण एन. नुवाल ने बारूद की पहली खेप वाइस एडमिरल एस.एन. घोरमडे, वाइस चीफ ऑफ नेवल स्टाफ को सौंपी। रक्षा अधिकारी ने कहा, यह पहली बार है कि सेवाओं ने एक भारतीय निजी कंपनी के साथ पूर्ण बंदूक गोला बारूद की डिलीवरी के लिए एक आदेश दिया है, जिसे एक वर्ष के भीतर निष्पादित किया गया था। भारतीय नौसेना ने ड्राइंग, डिजाइन स्पेसिफिकेशन, निरीक्षण उपकरण, सबूत और गोला–बारूद के परीक्षण को अंतिम रूप देने के माध्यम से तकनीकी सहायता प्रदान की। इसके साथ, भारतीय नौसेना ने 30 मिमी उच्च विस्फोटक बंदूक गोला बारूद के लिए आपूर्ति का एक वैकल्पिक स्रोत सफलतापूर्वक विकसित किया है, जो आत्मनिर्भर भारत नीति के हिस्से के रूप में स्वदेशी रूप से उत्पादित है। 1995 में स्थापित सोलर ग्रुप औद्योगिक विस्फोटक खंड में प्रमुख प्लेयर्स में से एक है और इसने रक्षा क्षेत्र में भी कदम रखा है।

जम्मू में अंतर्राष्ट्रीय सीमा के पास पाकिस्तानी घुसपैठिया गिरफ्तार

जम्मू सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने यहां अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास शनिवार तड़के एक पाकिस्तानी घुसपैठिए को गिरफ्तार किया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि बीएसएफ ने सियालकोट के निवासी मोहम्मद शाबाद (45) को सीमा पार से अरनिया सेक्टर में घुसने की कोशिश करते देखा। उन्होंने बताया कि उन्होंने उसे चेतावनी देने के लिए कुछ गोलियां चलाईं और उसे हिरासत में ले लिया। उन्होंने बताया कि शाबाद के पास से कोई आपत्तिजनक सामग्री नहीं मिली। इससे पहले, 25 अगस्त को जम्मू–कश्मीर के सांबा जिले में बीएसएफ ने एक पाकिस्तानी घुसपैठिए के पास से आठ किलोग्राम संदिग्ध हेरोइन बरामद करके नशीले पदार्थों की तस्करी की बड़ी कोशिश को नाकाम कर दिया था। इस दौरान सुरक्षा बलों की कार्रवाई में घुसपैठिया घायल हो गया था, लेकिन वह वापस पाकिस्तान भाग गया था।

सोनाली फोगाट हत्या मामले को रफा-दफा करने की कोशिश कर रही है पुलिस : कांग्रेस नेता लोबो

पणजी। कांग्रेस ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की नेता सोनाली फोगाट की कथित हत्या की जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) से कराने की शनिवार को मांग की। पार्टी ने आरोप लगाया कि पुलिस मामले को रफा–दफा करने की कोशिश कर रही है। फोगाट की मंगलवार को गोवा में रहस्यमय परिस्थितियों में मौत हो गई थी, जिसके बाद राज्य पुलिस ने उनके निजी सहायक सहित दो लोगों को हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया है। गोवा विधानसभा में विपक्ष के नेता माइकल लोबो ने कहा, 'कई नेताओं ने कहा कि उनकी मौत दिल का दौरा पड़ने से हुई थी, लेकिन अंत में उनकी हत्या किए जाने की बात सामने आई है। हत्या के इस मामले में जो सामने दिखाई दे रहा है, उसके अलावा भी बहुत कुछ छिपा है। हर पहलू की जांच किए जाने की जरूरत है। सच्चाई का पता लगाने के लिए इस तरह के मामलों की सीबीआई से जांच कराए जाने की आवश्यकता है।

दिवंगत मुख्यमंत्री जयललिता की मौत पर आयोग ने सीएम स्टालिन को सौंपी रिपोर्ट

नई दिल्ली। तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जे. जयललिता की मौत की परिस्थितियों की जांच करने वाले आयोग की बहुप्रतीक्षित रिपोर्ट शनिवार को राज्य सरकार को सौंपी गई। इस रिपोर्ट को 29 अगस्त को होने वाली राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में रखा जाएगा। न्यायमूर्ति अरुमुघस्वामी ने 150 गवाहों को सुनने के बाद यह रिपोर्ट तैयार करने के बाद इसे मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन को सौंपा और कहा कि अब इसे सार्वजनिक करने का फैसला सरकार पर निर्भर है। राज्य सरकार की ओर से जारी एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया है कि मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया है कि रिपोर्ट को सोमवार को होने वाली कैबिनेट बैठक में रखा जाए और उचित कार्रवाई की जाए। सत्तारूढ़ द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) ने राज्य में अप्रैल 2021 में होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले जयललिता की मौत की परिस्थितियों की उचित जांच करने और दोषी पाए जाने पर फिर से कानूनी कार्रवाई शुरू करने का वादा किया था। पूर्ववर्ती अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम (अन्नाद्रमुक) सरकार द्वारा गठित अरुमुघस्वामी जांच आयोग ने 22 नवंबर 2017 को मामले की जांच शुरू की थी। न्यायमूर्ति अरुमुघस्वामी मद्रास उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश हैं। न्यायमूर्ति अरुमुघस्वामी ने बाद में पत्रकारों से कहा कि लगभग 150 गवाहों को सुनने के बाद अंग्रेजी में 500 पृष्ठों और तमिल में 608 पृष्ठों की रिपोर्ट तैयार की गई है। उन्होंने कहा, ''केवल सरकार ही रिपोर्ट प्रकाशित करने का फैसला कर सकती है। रिपोर्ट में सभी संबंधित पहलुओं का उल्लेख किया गया है। यह पूछे जाने पर कि क्या ''किसी पर संदेह है इस पर उन्होंने कहा, ''यह रिपोर्ट है और उन्होंने विस्तार से कुछ बताने से इनकार कर दिया। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा, ''मैंने सब कुछ कहा है, हर बात का जवाब दिया है। उन्होंने यह भी कहा कि अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), दिल्ली ने जयललिता के निधन के तीन महीने बाद उनकी मृत्यु पर अपनी रिपोर्ट दी। न्यायमूर्ति अरुमुघस्वामी ने कहा कि यह जांच उनके लिए 'संतोषजनक थी और कई लोगों ने महसूस किया कि आयोग ने 'अदालत की तरह काम किया।

सम्पादकीय

जांच एजेंसियों की साख का सवाल

मोहर्रम के दिन बिहार में बड़ा राजनैतिक उलटफेर हुआ और पांच साल बाद जदयू और राजद एक साथ आ गए। बुधवार को महागठबंधन सरकार को सदन में बहुमत परीक्षण देना था और राजनैतिक संयोग ऐसा हुआ कि इसी दिन राजद से जुड़े कुछ लोगों के ठिकानों पर जांच एजेंसियों की छापेमारी हुई। इस कार्रवाई ने राजनैतिक पारे को और चढ़ा दिया। विधानसभा में फ्लोर टेस्ट के दौरान सत्तारुढ़ जदयू और राजद की विपक्ष में बैठी भाजपा से इस पर नोंक–झोंक हुई। तेजस्वी यादव ने कहा कि भाजपा जहां भी सत्ता में नहीं होती वहां अपने तीन जमाइयों को आगे करती है। इसमें ईडी, सीबीआई और आईटी शामिल हैं। इससे पहले बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी ने भी कहा था कि सीबीआई की कार्रवाई, हमें डराने के लिए हुई है, लेकिन हम डरने वाले नहीं हैं। इधर राजद सांसद मनोज झा ने भी कहा कि आप इन्हें ईडी, सीबीआई की नहीं आप इन्हें भाजपा की रेड (छापेमारी) कह सकते हैं। भाजपा पर ऐसे ही आरोप इन दिनों दिल्ली की आप सरकार भी लगा रही है। पिछले कुछ दिनों से उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के खिलाफ आबकारी नीति को लेकर जांच चल रही है।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल बार–बार संदेह जतला रहे हैं कि श्री सिसोदिया कभी भी गिरफ्तार हो सकते हैं। हालांकि उन्हें अब तक हिरासत में नहीं लिया गया है। अलबत्ता मनीष सिसोदिया ने पिछले दिनों एक गंभीर आरोप भाजपा पर लगाया था कि उन्हें एक संदेश भेजा गया था कि वे आप को तोड़ दें तो उनके खिलाफ जांच रुक जाएगी। तब मनीष सिसोदिया ने ट्विटर पर अपना जवाब बताया था कि मैं महाराणा प्रताप का वंशज हूं, राजपूत हूं। सर कटा लूंगा लेकिन भ्रष्टाचारियों–षड्यंत्रकारियों के सामने झुकूंगा नहीं। मेरे खिलाफ सारे केस झूठे हैं। जो करना है कर लो। मनीष सिसोदिया चाहते तो सीधे–सीधे भी इस तरह के किसी प्रस्ताव पर इंकार कर सकते थे। लेकिन खुद को राजपूत बताने का मकसद शायद गुजरात और उसके बाद राजस्थान और मध्यप्रदेश के चुनाव में पूरा हो सकता है, जहां राजपूत समुदाय के वोट जुटाने में आप को मदद मिल सकती है।

बहरहाल यहां मसला ये नहीं है कि मनीष सिसोदिया किस समुदाय से ताल्लुक रखते हैं और खुद को आम आदमी बता कर कैसे राजनैतिक फायदे के लिए जाति का कार्ड खेल सकते हैं। सवाल ये है कि जिस किसी ने भी मनीष सिसोदिया को अपनी पार्टी तोड़ कर भाजपा के साथ आने का प्रस्ताव दिया है और जो ये दावा कर सकता है कि इसके बदले उनके खिलाफ सारे मामले बंद हो जाएंगे, उसका नाम मनीष सिसोदिया खुल कर क्यों नहीं बताते। क्योंकि यहां बात केवल एक व्यक्ति से नहीं जुड़ी है, बल्कि देश के व्यवस्थागत ढांचे से खिलवाड़ से जुड़ी है।

अमृत काल में शेख हसीना का आगमन

सात सितंबर 2022 को बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना दिल्ली आ रही हैं। अमृत काल में शेख हसीना की चार दिवसीय यात्रा को कई नुक्ते–निगाहों से देखा जा रहा है। 26 से 27 मार्च 2021 को प्रधानमंत्री मोदी जब बांग्लादेश गये थे, वहां भी अमृत काल जैसा ही माहौल था। बांग्लादेश की आजादी की स्वर्ण जयंती, साथ में बंग बंधु शेख मुजीबुर्रहमान की जन्म शताब्दी। इस बार दोनों नेता बांग्लादेश से भारत आने वाली स्वाधीनता सड़क का आभासी अनावरण करेंगे। इस अनावरण महोत्सव में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की सहभागिता होगी? यह स्पष्ट नहीं है। यह सड़क बांग्लादेश के मुजीबनगर जिले के मेहरपुर से आरंभ होती है, और पश्चिम बंगाल के नादिया जिले से संपर्क स्थापित करती है। 26 मार्च 2021 को इस बहुचर्चित स्वाधीनता सड़क का उद्घाटन होना था। इस सड़क का ऐतिहासिक महत्व है। 1971 में बांग्लादेश की पहली सरकार मुजीबनगर में ही स्थापित हुई थी। 25 किलोमीटर लंबी महत्वपूर्ण, अति महत्वाकांक्षी स्वाधीनता सड़क समय पर बन नहीं पाई, इस कारण इसके उद्घाटन में 18 महीने की देरी हुई है। रुकावट के लिए खेद है। एई पार बांग्ला अब उस बात को गंभीरता से न ले। आठ सितंबर को ढाका वापसी से पहले शेख हसीना जयपुर और अजमेर शरी+फ जाएंगी, ऐसा बताया गया है। 6 सितंबर 2022 को दोनों शासन प्रमुख ऊर्जा, प्रतिरक्षा, व्यापार में सहयोग के वास्ते समझौते को हरी झंडी देंगे। सीमा प्रबंधन, जल सहभाजन जैसे विषयों पर भी उभयपक्षीय बातचीत

होगी। शेख हसीना इसका भरोसा दिलाएंगी कि उनके देश में अल्पसंख्यक हिंदू उतने ही अधिकार और आजादी से रह रहे हैं, जितना कि बहुसंख्यक मुसलमान। ढाका ट्रिब्यून ने शेख हसीना केवक्तव्यों को कोट किया है, कृपया खुद को कमजोर न समझें। आप भी इसी देश में जन्मे हैं। आप इस देश के नागरिक हो। हम चाहते हैं कि सभी धर्मों के लोग समान अधिकार से रहें।

अच्छी बात है कि शेख हसीना बांग्लादेश के हिंदुओं को सुरक्षित व साधिकार रहने का भरोसा दे रही हैं, मगर जमाते इस्लामी से जुड़ा वहां का प्रतिपक्ष भारत में मुसलमानों की स्थिति पर सवाल पूछ रहा है। शेख हसीना ऐसे समय भारत आ रही हैं, जब बंगाल में दुर्गा पूजा की तैयारियां शुरू हो जाती है। पिछले साल दुर्गा पूजा के अवसर पर ही बांग्लादेश धू–धू जल रहा था। 22 शहरों में पूजा पंडाल फूंक दिये गये थे। 28 अक्टूबर 2021 को शेख हसीना सरकार को बयान देना पड़ा कि दंगों में छह लोग मारे गये, जिनमें दो हिंदू और चार मुसलमान थे।2021 में दंगा रुक तो गया, मगर यह आग गाहे ब गाहे सुलगती रहती है। जुलाई 2022 में खुलना जिले के एक छात्र ने फेसबुक पोस्ट पर कुछ ऐसा लिख दिया कि दंगा भड़क उठा। ढाका से प्रकाशित डेली स्टार ने आइन ओ सालिश नामक एक कानूनी सलाहकार समूह के आंकड़ों के आधार पर जानकारी दी कि जनवरी 2013 से सितंबर 2021 के बीच बांग्लादेश में हिंदू समुदाय पर 3 हजार 679 बार हमले हुए हैं। 13 साल 235 दिनों से अवामी लीग लगातार सत्ता में रही है, तो सवाल उसी से पूछे जाएंगे कि शेख हसीना सरकार दंगाई मानसिकता पर काबू पाने में सफ ल क्यों नहीं हो पा रहीं? यह कुछ अजीब सा लगता है कि भारत की राजकीय यात्रा पर आने से पहले हिंदुओं की सुरक्षा को लेकर बांग्लादेश की प्रधानमंत्री को बयान देना पड़ रहा है। क्या इसलिए कि यहां जो फ्रिं ज एलीमेंट हैं, वो उनकी यात्रा के समय शांत रहें? लेकिन एक बात पर शेख हसीना का लाइन ऑफ एक्शन विप्लवकारियों को तुष्ट करता है कि उन्होंने रोहिंग्या शरणार्थियों के साथ जो कुछ भारत में हो रहा है, उसे मुद्दा नहीं बनाया।

शेख हसीना यह चाह रही हैं कि रोहिंग्या की म्यांमार वापसी में भारत उनका साथ दे। शेख हसीना सरकार को इस बात से तन्कीद है कि भारत में जो मानव तस्कर सक्रिय हैं, वो चोरी–छिपे रोहिंग्या शरणार्थियों को बांग्लादेश भेजने में लगे हुए हैं। शेख हसीना सरकार ने कोक्स बाजार में भारत से भाग कर आये कुछ रोहिंग्या परिवारों को मय सुबूत प्रस्तुत किया है। गुरूवार 25 अगस्त को ढाका यूनिवर्सिटी के फॉरेन सर्विस अकादमी में रोहिंग्या संकट व नरसंहार विषय पर एक सेमीनार में 14 मुल्कों के दूतों ने चिंता प्रकट की, और इसके निदान के रास्ते सुझाए। जापान तो बल्कि एक कदम आगे बढ़कर कुछ रोहिंग्या शरणार्थियों को अपने यहां पुनर्वास की पेशकश भी उस सेमिनार में कर चुका है। यदि यह फार्मूला आगे बढ़ता है, फिर भारत को भी टोपी पहनाने के कूटनीतिक प्रयास शुरू न हो जाएं।आज की तारीख में अमेरिकी विदेश मंत्री अंटोनी ब्लिंकन संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और हेग स्थित इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस (आईसीजे) में रोहिंग्या मामले में म्यांमार को बख्शने वाले नहीं, ऐसा उनके बयानों से साफ नजर आता है। उसकी सबसे बड़ी वजह म्यांमार का चीनी–रूसी कैंप में जाना भी है। म्यांमार धीरे–धीरे पूर्वी एशिया में अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का अखाड़ा बनने लगा है, इस बात को समझना जरूरी है।

भारत में जो लोग रोहिंग्या के नाम पर सड़क पर राजनीति खेल रहे हैं, उन्हें एक बार फिर से विचार करना चाहिए कि कोई ऐसी गलती न हो, जिससे अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने नाक कटाने वाली स्थिति पैदा हो जाए। भारत म्यांमार के सैनिक शासकों से उस भाषा में बात नहीं कर सकता, जिस भाषा में बांग्लादेश, अमेरिका, यूरोप, और ओआईसी के देश कर रहे हैं। रोहिंग्या शरणार्थी समस्या, मोदी सरकार के गठन के साथ गले की हड्डी बनी पड़ी है। 15 जुलाई 2014 को लोकसभा में प्रश्न संख्या 739 के जवाब में मोदी सरकार के मंत्री किरण रिजिजू बयान दे रहे थे कि भारत में 29 दिसंबर 2011 तक म्यांमार से भाग कर केवल 4621 लोग शरण लेने आये थे। तो क्या उनमें से क्या एक भी व्यक्ति रोहिंग्या नहीं है? तत्कालीन गृह राज्य मंत्री रिजिजू 29 दिसंबर 2011 तक का ब्योरा प्रस्तुत कर रहे थे। लेकिन सच यह है कि 2011 के बाद भी म्यांमार से पलायन हुआ है। म्यांमार में साल 2017 वो काला कालखंड है, जब साढ़े सात लाख रोहिंग्या भागकर बांग्लादेश पहुंच चुके थे। रोहिंग्या शरणार्थियों का एक बड़ा हिस्सा भारत की खुली सीमा का फायदा उठाकर इधर भी आ चुका था। यूएनएचसीआर के अधिकारी भारत पहुंचे रोहिंग्या शरणार्थियों की संख्या 43 हजार बता रहे हैं, जिनमें से श्यूएनएचसीआरश ने 16 हजार 500 को रजिस्टर्ड कर रखा है। सवाल यह भी है कि बीएसएफ जो गृह मंत्रालय के अधीन है, वह क्या कर रही थी? म्यांमार सीमा से लगे मिजोरम के 404 किलोमीटर और बांग्लादेश से लगी 318 किलोमीटर भारतीय सीमा की चौकसी की सामूहिक जिम्मेदारी बीएसएफ दूसरे पैरा मिल्ट्री फोर्स, एमआई से लेकर आईवी, स्थानीय खुफिया विभाग और लोकल पुलिस की है। देश की सबसे जिम्मेदार राष्ट्रवादी सरकार की नाक के नीचे घुसपैठ हो रही थी, तो किसके विरूद्ध कार्रवाई होनी चाहिए? बांग्लादेश से पलायन किये मुसलमानों को पूर्वोत्तर भारत पहले से ही झेल रहा है। अब रोहिंग्या हमारी सीमा पर तैनात फोर्स की गलती से गले आ पड़े हैं। एक खबर जुलाई 2022 में आई कि जम्मू वाले इलाके से दो से तीन हजार रोहिंग्या शरणार्थी गिरफ्तारी के डर से किन्हीं और ठिकानों पर कूच कर चुके हैं। **– पुष्परंजन**

आज का राशिफल

मेष :– आज का दिन शुभ और फलदायी होगा। महत्त्वपूर्ण निर्णय न लेने की सलाह है। यात्रा के योग हैं। लेखनकार्य के लिए अच्छा दिन है। महिला के साथ विवाद में न उतरें।

वृषभ :– मन को स्थिर रखने की सलाह गणेशजी देते हैं, क्योंकि अर्निणय की मनोदशा से अवसर गवां सकते हैं। प्रवास का आयोजन टाल दें। नए कार्य प्रारंभ न करें।

मिथुन :– लक्ष्मीजी की कृपा से दिन लाभदायी होगा। उत्तम भोजन, सुंदर वस्त्र व अपनों के साथ से दिन आनंददायी होगा। धन अधिक व्यय न करें।

कर्क :– कोई भी महत्त्वपूर्ण निर्णय न लें। संबंधियों से मनमुटाव हो सकता है। वाणी पर संयम रखें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मानहानि एवं धनहानि से बचें।

सिंह :– आज का दिन लाभदायी है। मित्रों से लाभ और पर्यटन की संभावना है। हाथ आया अवसर जा सकता है, इसलिए निर्णय टाल दें। व्यापार एवं आर्थिक लाभ के योग हैं।

कन्या :– आज दिन शुभ है। नए कार्य संपन्न होंगे। व्यापारी व नौकरीपेशा लोगों के लिए समय अच्छा है। व्यापार में लाभ व नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। पिता से लाभ होगा।

तुला :– व्यावसाय में लाभ की संभावना है ऐसा गणेशजी कहते हैं। नौकरी व व्यापार में सहकर्मियों से सहयोग नहीं मिलेगा। लंबी यात्रा का आयोजन हो सकता है। अस्वस्थ रहेंगे।

वृश्चिक :– आज शांति व सावधानीपूर्वक रूप से रहने की गणेशजी की सलाह है। नए कार्यों में असफलता के योग हैं। क्रोध पर संयम रखें। सरकार विरोधी प्रवृत्तियों से दूर रहें।

धनु :– आज का दिन आनंदपूर्वक बीतेगा। सहवास का आनंद मिलेगा। प्रवास, पर्यटन होगा। लेखनकार्य के दिन अनुकूल है। साझेदारी से लाभ होगा।

मकर :– व्यापार में विकास के लिए आज का दिन लाभकारी रहेगा। धन के लेनदेन में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। घर में सुख–शांति का वातावरण बना रहेगा।

कुंभ :– आप की वाणी व विचारों में शीघ्र परिवर्तन होगा। बौद्धिक चर्चा में शामिल होंगे। आकस्मिक खर्च की आशंका है। पाचन न होने जैसी बीमारियों से परेशान होंगे।

मीन :– गणेशजी कहते हैं कि आप में उत्साह व स्फूर्ति की कमी होगी। परिजनों के साथ विवाद न करें। अस्वस्थ महसूस करेंगे। नौकरी में चिंता रहेगी। धन व कीर्ति की हानि न हो ध्यान रखें।

जनता की आंखों पर पट्टी बांधने के खेल

एकदम हाल में सामने आए तीन घटनाक्रम इसका एकदम साफ–साफ इशारा करते हैं कि मोदी सरकार ने जिसे आजादी के 75 साल पूरे होने के साथ शुरू हुए अमृतकाल का नाम दिया है, उसमें जनतंत्र का अमृत अगर पूरी तरह गायब नहीं तो बहुत ही दुर्लभ जरूर होने जा रहा है। इसकी वजह बहुत सीधी और आसान है। सभी जानते हैं कि जनतंत्र के लिए स्वतंत्र अभिव्यक्ति के पर्यावरण और खासतौर पर स्वतंत्र मीडिया की वही भूमिका है, जो किसी जीवन के लिए आंखों की है। आखिर, एक स्वस्थ्य जनतंत्र एक ऐसे नागरिक समाज तथा नागरिक जीवन की अपेक्षा करता है, जो अपने जागृतिपूर्ण हितों को इस हद तक स्वर देने में समर्थ हो कि राज्य व्यवस्था का, उनसे संचालित होना सुनिश्चित कर ही नहीं सकता हो बल्कि करता भी हो। समय–समय पर कराए जाने वाले चुनावों से लेकर, समय–समय पर उठने वाले जनता के विभिन्न हिस्सों के आंदोलन तक, यही सुनिश्चित करने का काम करते हैं कि शासन, अपने हितों की जनता की जागृत समझ से संचालित हो या कम से कम उसके खिलाफ तो किसी भी सूरत में नहीं जा सके। स्वतंत्र अभिव्यक्ति के पर्यावरण और स्वतंत्र मीडिया के बिना, यह सुनिश्चित कर पाना असंभव है कि राज्य या शासन, अपने हितों की जनता की ऐसी किसी जागृत समझ से संचालित हो क्योंकि उनके जरिए निर्मित जानकारीपूर्ण विमर्श ही, नागरिक समाज में ऐसी जागृत समझ का निर्माण करता है। इसलिए, स्वतंत्र अभिव्यक्ति के पर्यावरण और स्वतंत्र मीडिया के लिए मैदान को जितना सीमित किया जाता है, जितना खत्म किया जाता है, उतनी ही जनतंत्र की आंखों की रौशनी छीनी जा रही होती है।

और उक्त तीन ताजा घटनाएं, जनतंत्र की आंखों की रौशनी के इसी छीने जाने को दिखाता है। यहां छीने जाने की बात सचेत रूप से कही जा रही है। यह सिर्फ किसी प्रकार से जनतंत्र की आंखों की रौशनी कम होते जाने का ही मामला नहीं है। यह मौजूदा सरकार द्वारा सचेत रूप से और अपने प्रत्यक्ष या परोक्ष कदमों से जनतंत्र की आंखों की रौशनी कम करने का या रौशनी छीनने का मामला है। इनमें पहला प्रकरण, जिसमें मौजूदा शासन की भूमिका परोक्ष ही नजर आती है, अडानी ग्रुप द्वारा महत्वपूर्ण स्वतंत्र समाचार चौनल समूह, एनडीटीवी की झपट्टमार खरीदी का है। किसी से छुपा हुआ नहीं कि भारत में मीडिया का काफी बड़ा हिस्सा खासतौर पर

स्वतंत्रता के बाद से, इजारेदार समूहों द्वारा ही नियंत्रित रहा है। टीवी के आने के और खासतौर पर केबल टीवी, डिश टीवी आदि का बोलबाला होने के बाद से, जो समाचार चौनलों के विस्फोट का भी दौर है, यह इजारेदाराना नियंत्रण और भी तेजी से बढ़ा है। इस इजारेदाराना नियंत्रण के नतीजे में एक प्रकार की नकारात्मक छन्नी मीडिया में करीब शुरू से ही लगी रही थी, जो यह सुनिश्चित करती थी कि संबंधित इजारेदार समूह ही नहीं, आम तौर पर एक वर्ग के रूप में बड़ी पूंजी के हितों के खिलाफ जाने वाली कोई सामग्री प्रदर्शित प्रसारित नहीं हो। संचार तथा खासतौर पर टीवी संचार के विस्फोट के दौर में, जो नवउदारवादी नीतियों का भी दौर था, एक साथ विस्तार तथा केंद्रीयकरण में गुणात्मक छलांग के साथ ही, निषेधा का यह नियंत्रण भी गुणात्मक रूप से कस गया। बहरहाल, 2014 में इजारेदार घरानों की खास पसंद के रूप में नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री का पद संभालने के बाद, जिस इजारेदार–हिंदुत्ववादी गठजोड़ को सुपर सरकार के तौर पर स्थापित किया गया है, उसके ऑक्टोपसी हाथों ने आमतौर पर संचार तथा विशेष रूप से टीवी संचार को, पूरी तरह से अपने शिकंजे में कस लिया है। अचरज नहीं कि आज मनोरंजन तथा सूचना, टेलीविजन के दोनों ही पहलुओं पर, एक दर्जन से भी कम इजारेदार घरानों का नियंत्रण है और इनमें भी इजारेदारी के सोपान पर जो जितना ऊपर है, उसके नियंत्रण का दायरा भी उतना ही ज्यादा है। जाहिर है कि मनोरंजन तथा सूचना के क्षेत्रों को मिलाकर, सबसे बड़ा दायरा अब तक रिलायंस समूह का रहा है। बहरहाल, इजारेदार–हिंदुत्ववादी गठजोड़ के राज में, बड़े इजारेदारों द्वारा सूचना–संचार पर नियंत्रण तो रॉकेट की रफ्तार से बढ़ा है क्योंकि इस गठजोड़ के अस्तित्व के लिए, विचार–नियंत्रण का यह हथियार उतना ही ज्यादा जरूरी है। अचरज नहीं कि चौनलों की खरीद के तरह–तरह के सौदों से लेकर, सत्ता के सभी हथियारों तक का व्यवस्थित तरीके से दुरुपयोग करने के जरिए, मोदी राज में यह सुनिश्चित किया गया है कि मुख्यधारा के स्वतंत्र मीडिया जैसी आवाज बचे ही नहीं, जो इस इजारेदार–हिंदुत्ववादी गठजोड़ के स्वार्थ साधने वाले नैरेटिव को, असरदार तरीके से पंचर कर सकती हो। इसी पृष्ठभूमि में एनडीटीवी की गिनती एक्का–दुक्का सम्माननीय अपवाद के रूप में होती थी। बहरहाल अब, लंबे समय से जारी कोशिशों के बाद, प्रधानमंत्री के सबसे चहेते इजारेदार समूह, अडानी द्वारा इस अपवाद पर कब्जा किए जाने का रास्ता खुल गया लगता है। इससे पहले, इस स्वतंत्र आवाज को कुचलने के लिए, मोदी सरकार ने अपनी ओर से सभी हथियार आजमाए थे। सीबीआई से लेकर सेबी तक, सभी सरकारी एजेंसियों से बार–बार जांचे कराई गई थीं और एक के बाद एक बेहिसाब मुकद्दमे थोपे गए थे। सरकारी ही नहीं निजी विज्ञापनों को भी रोकने के लिए तरह–तरह की नाकेबंदियां की गयी थीं, वह अलग। इसके बावजूद, जब इस आवाज को बंद नहीं कराया जा सका तो, इन दमनकारी कदमों को, खरीदने की कोशिशों का सहायक बना दिया गया। बहरहाल, जब ये कोशिशें भी कामयाब होती नजर नहीं आयीं, तो एक दिन अचानक वह हो गया जिसकी कल्पना भी करना मुश्किल था। एकाएक अडानी ग्रुप ने इसका एलान कर दिया कि उसने, रिलायंस से जुड़ी उस कंपनी को खरीदने के जरिए, जिसने एनडीटीवी को 300 करोड़ से ज्यादा का व्यापारिक ऋण दिया था और इसके आधार पर उसे एनडीटीवी के 29 फीसदी शेयर पर अधिकार मिला था, एनडीटीवी की 29 फीसदी मिल्कियत हासिल कर ली है और 26 फीसदी और शेयर वह खुले बाजार से खरीदने जा रहा है। इस तरह, अब एनडीटीवी पर उसका पूर्ण नियंत्रण तय हो गया है।

खाद्य सुरक्षा के लिए गेहूं का आयात जरूरी

इस साल मार्च में उत्तर भारत में असाधारण गर्मी पड़ी जिसके कारण गेहूं की पैदावार में कमी आई है। उत्तरी यूरोप में गर्मी की लहर और भी खराब थी जिसके कारण गेहूं का उत्पादन प्रभावित हुआ। गर्मी की लहर तथा यूक्रेन से निर्यात में गिरावट के कारण दुनिया में लगभग 14 मिलियन टन गेहूं की कमी हो सकती है। इससे गेहूं की कीमतों में उछाल आया है। पर्याप्त आपूर्ति के लिए राजनयिक और वाणिज्यिक दोनों ही स्तरों पर जोरदार प्रयास किए जा रहे हैं। इनमें गोदामों में संग्रहित पिछले साल का अनाज भी शामिल है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आश्वासन दिया था कि श्बम्पर फसल होने के कारण भारत दुनिया को खिला सकता है, लेकिन मार्च में पड़ी तेज गर्मी के बाद फसल उत्पादन के पुनर्मूल्यांकन के कारण जल्दबाजी में गेहूं के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया गया। यह ऐसा कदम था जिसने ऊंची अंतरराष्ट्रीय कीमतों के कारण अप्रत्याशित लाभ की उम्मीद कर रहे किसानों को निराश कर दिया। अब स्थिति गंभीर हो सकती है। इस साल का उत्पादन पिछले साल की तुलना में 10 प्रतिशत तक कम रह सकता है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पब्लिक डिस्ट्रिब्यूशन सिस्टम–पीडीएस) और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाई) दोनों ही योजनाओं के लिए अधिक खाद्यान्न आवंटन के साथ ही कम खरीदी के कारण वर्तमान स्टॉक पर्याप्त से कम है। पीडीएस तथा पीएमजीकेएवाई (मुफ्त खाद्यान्न योजना) के साथ देश की कुल वार्षिक आवश्यकता लगभग 32 मिलियन टन है। इसमें 8 मीट्रिक टन का न्यूनतम बफर स्टॉक भी जोड़ना होगा जिसे आकस्मिकताओं, आपात स्थितियों और मूल्य स्थिरीकरण के लिए बनाए रखना होता है। दुर्भाग्य से वर्तमान स्टॉक में, जिसमें पिछले साल से कैरी ओवर स्टॉक शामिल हैय करीब 20 मीट्रिक टन की नयी खरीद की कमी नजर आती है।

खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग इस संभावित कमी से इनकार करता है। हालांकि किसी भी आसन्न कमी का सबसे अच्छा संकेत कीमतों से मालूम पड़ता है। गेहूं की महंगाई दर 12 फीसदी पर चल रही है। व्यापारियों का अनुमान है कि पिछले साल के 111 मीट्रिक टन की तुलना में इस साल केवल 95 मीट्रिक टन उत्पादन होगा जो काफी कम है। यहां तक कि अमेरिका के कृषि विभाग के एक स्वतंत्र आकलन में भी इस साल भारत में गेहूं का उत्पादन 98 मीट्रिक टन होने का अनुमान है। पीएमजीकेएवाई के तहत खाद्यान्न वितरण की प्रतिबद्धता को हाल ही में छठी बार सितंबर 2022 के अंत तक बढ़ाया गया है। मुफ्त खाद्यान्न

के हस्तांतरण ने न केवल कुछ मात्रा में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की है बल्कि लाभार्थियों को खाद्य मुद्रास्फीति से भी बचाया भी है। ऐसा इसलिए है क्योंकि लाभ नकद के बजाय वस्तु रूप में दिया गया था। छठे चरण के लिए कुल वृद्धिशील परिव्यय लगभग 80,000 करोड़ रुपये है। कोविड–19 की पहली लहर के दौरान शुरू किए गए पीएमजीकेएवाई के लाभों को कम करने के बारे में सरकार विचार कर सकती है लेकिन पीएमजीकेएवाई की समाप्ति अचानक नहीं होनी चाहिए। इस संदर्भ में यह महत्वपूर्ण है कि गेहूं का आयात न तो राष्ट्रीय शर्मिंदगी की बात है और न ही इसका राजनीतिकरण किया जाना चाहिए। यह गर्व की बात है कि हरित क्रांति की प्रारंभिक सफलता और किसानों को उत्पादन हेतु प्रोत्साहन देने वाली सार्वजनिक खरीद की नीतियों के बाद भारत कई दशकों से खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर रहा है, परन्तु पिछले कुछ वर्षों में भारतीयों की भोजन पद्धति में विभिन्न प्रकार के बदलाव दिखाई दे रहे हैं। सबसे पहले ज्वार और बाजरा जैसे मोटे अनाज के उपभोग के बदले गेहूं और चावल जैसे अनाज खाने की प्रवृत्ति बढ़ी है। दूसरे, मांस, डेयरी और पोल्ट्री उत्पादों की खपत में वृद्धि हुई है। इसके लिए पशुओं को आहार के रूप में देने के लिए मक्का और सोया सहित खाद्यान्न के बड़े पैमाने पर उत्पादन की आवश्यकता होती है। वास्तव में पशु आहार की मांग तेजी से बढ़ी है जिसके कारण लागत भी बढ़ी है। इसके परिणामस्वरूप दूध की कीमतों में बहुत वृद्धि हुई है। अनाज सेवन बदलने का तीसरा कारण समाज में रेस्तरां और सामुदायिक रसोई में रेडीमेड भोजन के रूप में अधिक भोजन परोसा जा रहा है जिसका अधिकतर भाग बरबाद हो जाता है। इस वजह से भी खाद्यान्न की मांग में वृद्धि की संभावना है। इस प्रकार यदि हम बदलते उपभोग पैटर्न, बढ़ती आय और समशद्धि को ध्यान में रखते हुए खाद्यान्न की मांग को बढ़े स्वरूप में देखते हैं तो यह स्पष्ट है कि उत्पादकता, पैदावार तथा रकबे की वशद्धि की वर्तमान दर पर घरेलू उपलब्धता पर्याप्त नहीं होगी।

इसलिए देर–सबेर भारत को खाद्य सुरक्षा के लिए आयात से महत्वपूर्ण संबंध रखने वाली योजना बनानी होगी या भारतीयकंपनियों को ऑस्ट्रेलिया या इथियोपिया जैसे देशों में खाद्य उत्पादन के लिए प्रोत्साहित करना होगा जहां खेती के लिए पर्याप्त जमीनें हैं। भले ही भारत को बदलते उपभोग पैटर्न के कारण बढ़ती घरेलू अपर्याप्तता की वजह से खाद्य आयात की योजना बनानी पड़ रही है लेकिन हकीकत यह है कि खाद्य असुरक्षा की वर्तमान स्थिति गंभीर है। हाल ही में प्रकाशित श्स्टेट ऑफ फूड सिक्योरिटी एंड न्यूट्रिशन इन द वर्ल्ड रिपोर्टश में कहा गया है कि 2019–21 के दौरान भारत की 40.6 प्रतिशत आबादी मध्यम या गंभीर खाद्य असुरक्षा से पीड़ित थी। गंभीर रूप से खाद्य असुरक्षित लोगों का अनुपात 2018–20 में 20.3 प्रतिशत से बढ़कर 22.3 प्रतिशत हो गया है। विश्व में यह औसत 10.7 प्रतिशत से भी कम है। इस प्रकार दुनिया के एक तिहाई से अधिक भूखे और कुपोषित लोग भारत में हैं जो यदि शर्मनाक नहीं तो चिंताजनक जरूर है। वैश्विक भूख सूचकांक (ग्लोबल हंगर इंडेक्स–जीएचआई) में भी भारत की रैंक 116 देशों की सूची में गिरकर 101 पर आ गई है। अलबत्ता जीएचआई स्कोर में पिछले कुछ वर्षों में सुधार हो रहा है लेकिन 27.5 का नवीनतम स्कोर अभी भी गंभीर माना जाता है। यहां तक कि अनाज के विकसित न होने, बरबादी और बाल कुपोषण जैसे अनेक उप–घटक भी चिंताजनक हैं। जीएचआई की गणना बाल मश्त्यु दर, बच्चों के कुपोषण तथा खाद्य आपूर्ति पर्याप्तता के तीन आयामों का उपयोग करके की जाती है। आयातित खाद्य तेलों पर भारत की बहुत अधिक निर्भरता खाद्य अर्थव्यवस्था का एक अन्य पहलू है। दालें, प्रोटीन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं लेकिन इनके उत्पादन में भी वशद्धि नहीं हुई है। दालों का आयात कुल खपत का 10 से 15 प्रतिशत है। भविष्य में इसमें और बढ़ोतरी हो सकती है। भारत में दूध का उत्पादन दुनिया में सबसे अधिक है लेकिन खपत के मामले में विश्व औसत तक आने के लिए प्रति व्यक्ति खपत को काफी बढ़ाने की आवश्यकता है। प्रति व्यक्ति दूध की खपत बढ़ाने के लिए दूध उत्पादन हेतु मकई जैसे पशु फीडस्टॉक के बहुत अधिक उत्पन्न होने की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ यह भी है कि कृषि उत्पादन में तेजी से वृद्धि का दबाव है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि निकट भविष्य में खाद्य आयात पर भारत की निर्भरता बढ़ेगी। इन सब बातों को देखते हुए खाद्यान्न आयात का मुद्दा यह अपने आप में न तो राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का मामला है और न ही शर्मिंदगी का। हम आखिरकार ऊर्जा के बड़े आयातक हैं और जिसे हम नवीकरणीय ऊर्जा के अधिक उपयोग के साथ कम करने की उम्मीद करते हैं। इसी तरह आने वाले वर्षों में हमें आयात बढ़ाकर और रणनीतिक योजना और समन्वय के साथ इसे जोड़कर खाद्य सुरक्षा जरूरतों को पूरा करने की चुनौती का सामना करना होगा। उत्पादकता बढ़ाने और फसल विविधीकरण सुनिश्चित करने में नवीनतम प्रौद्योगिकी की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। वैसे, जब तक हम खाद्य सुरक्षा जरूरतों की चुनौती को पूरा नहीं करते, हमारे पास पैदावार बढ़ाने तथा फसलों में विविधता लाने के लिए उच्च प्रौद्योगिकी नहीं है, जब तक हम आयात में रणनीतिक योजना तथा समन्वय को जोड़ नहीं पाते हैं तब तक भारत में खाद्य सुरक्षा व घरेलू मूल्य स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए गेहूं का बड़े पैमाने पर आयात आवश्यक होगा। **– डॉ.अजीत रानाडे**

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने लखनऊ से किया जल्द 5 जी लाने का वादा, योगी की तारीफों के बांधे पुल

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह अपने संसदीय क्षेत्र लखनऊ के तीन दिवसीय दौरे पर हैं. वहीं दौरे के दूसरे दिन राजधानी में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पिछले आठ वर्षों में भारत को लेकर दुनिया के दूसरे देशों की सोच बदली है. हमारी प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता बढ़ी है. मैं अलग–अलग देशों की यात्रा पर जाता हूं और लोगों से बात करता हूं. मैं महसूस करता हूं कि अब भारत को लेकर विश्व की सोच बदल रही है। वहीं रक्षामंत्री ने लखनऊ वासियों से जल्द फाइव जी स्पेक्ट्रम का वादा किया और पीएम मोदी, सीएम योगी की तारीफों के पुल बांध दिए. राजनाथ ने कहा कि जब तक देश के पीएम मोदी हैं तब तक कोई घोटाला नहीं हो सकता. यूपी में हो रहे विकास के लिए योगी आदित्यनाथ सरकार की

तारीफ करते हुए राजनाथ सिंह ने कहा कि प्रदेश में जिस तरह से इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट हो रहा है, वो दिन दूर नहीं कि हमारा यूपी न्यूज जेनरेशन इंफ्रास्ट्रक्चर के मामले में देश के सभी राज्यों से आगे होगा। राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत की प्रतिष्ठा और साख बढ़ रही है. मुझे कई देशों का दौरा करने और वहां के लोगों से बात करने का अवसर मिलता है. मैंने कई बार सबसे विकसित देश का दौरा किया है. अमेरिकियों की बात सुनकर गर्व से भर जाता है, भारत के प्रति लोगों की धारणा बदल रही है।

राजनाथ सिंह ने 185 करोड़ की योजनाओं का किया लोकार्पण

लखनऊ। रक्षा मंत्री और सांसद राजनाथ सिंह उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के तीन दिवसीय दौरे के दूसरे दिन शनिवार को अटल बिहारी वाजपेयी कन्वेंशन सेंटर में 185 करोड़ की योजनाओं का लोकार्पण किया। इस दौरान रक्षामंत्री ने कहा कि इंफ्रा क्षेत्र में सबसे ज्यादा काम मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सरकार कर रही है। राजनाथ सिंह ने कहा कि अत्यधिक व्यस्तता रहने के बावजूद कोशिश करता हूँ कि जनता के बीच आता रहूं। क्योंकि जनता अपने जनप्रतिनिधि से यह अपेक्षा करती है।

अवकाश निरस्त किए जाने की मांग

लखनऊ। चतुर्थ श्रेणी राज्य कर्मचारी संघ चिकित्सा एवं स्वास्थ्य आयुर्वेदिक एवं यूनानी सेवाएं उत्तर प्रदेश के प्रदेष अध्यक्ष ने संघ के चुनाव के लिए घोषित अवकाश को निरस्त करने की मांग की है। उनका आरोप है कि संघ द्वारा सदस्यता समाप्त किए गए कर्मचारी की मांग पर अवकाष घोषित किया जाना संघ के संविधान के विरूद्व है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश के चतुर्थ श्रेणी राज्य कर्मचारी संघ चिकित्सा एवं स्वास्थ्य आयुर्वेदिक एवं यूनानी सेवाएं उत्तर प्रदेश की प्रान्तीय बैठक 18 दिसम्बर 2021 को गई थी।

इस बैठक में चुनाव के लिए अवकाश स्वीकृति के लिए विभागाध्यक्ष को पत्र संख्या 105/7 दिसम्बर 2021 चर्चा की गई कि अवकाश की स्वीकृति प्राप्त न होने पर बैठक में निर्वाचित की प्रतिक्रिया पूर्ण न होने की स्थिति में आम सभा की बैठक में श्री धर्मपाल को प्रदेश अध्यक्ष एवं रामदेव वर्मा को प्रदेश महामंत्री मनोनीत किया गया था।

ग्राम पंचायत शरीफपुर में स्मृति वाटिका, ऑगनबॉड़ी केन्द्र, उप स्वास्थ्य केन्द्र का किया निरीक्षण

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। मुख्य विकास अधिकारी श्री शिपू गिरि ने शनिवार को विकास खण्ड हण्डिया के ग्राम पंचायत शरीफपुर में किए गए कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय श्री भुल्लर प्रसाद यादव, खण्ड विकास अधिकारी हण्डिया, सहायक विकास अधिकारीगण, ग्राम प्रधान, ग्राम सचिव एवं विकास खण्ड के अन्य अधिकारीध कर्मचारीगण उपस्थित रहें। निरीक्षण के उपरान्त ग्राम पंचायत में श्री वी०के० सिंह, मा० जिला पंचायत अध्यक्ष द्वारा मुख्य अतिथि एवं श्री महेन्द्र सिंह, ब्लाक प्रमुख हण्डिया, विशिष्ठ अतिथि के रूप में ग्राम के कम्पोजिट विद्यालय के कैम्पस में चौपाल लगाकर विभिन्न विकासपरक योजनाओं एवं लाभार्थीपरक योजनाओं की चर्चा की गयी। मुख्य विकास अधिकारी द्वारा ग्राम पंचायत शरीफपुर में स्मृति वाटिका, ऑगनबॉड़ी केन्द्र, उप स्वास्थ्य केन्द्र का निरीक्षण किया गया, जिसके अन्तर्गत सभी केन्द्रों के कैम्पस की

आवश्यक साफ–सफाई एवं साज–सज्जा कराने के निर्देश दिए गए। ऑगनबाड़ी कार्यकत्री द्वारा केन्द्र पर उपस्थित रहकर बच्चों को पढ़ाने का कार्य कर रही थी, जो सन्तोषजनक था। चौपाल में सिंचाई हेतु नाली बनाने हेतु चर्चा की गयी। सभी हैण्डपम्प चालू हालत में पाए गए। सामुदायिक शौचालय क्रियाशील पाया गया। मा० अध्यक्ष, जिला पंचायत डॉ वी०के० सिंह द्वारा ग्राम पंचायत में पिंक शौचालय की स्थापना कराने की घोषणा की गयी, जिसका रख–रखाव ग्राम पंचायत द्वारा किया जाएगा। ग्राम पंचायत शरीफपुर में 25 अन्त्योदय कार्डधारक है।

अधेड़ खुद को आग लगाकर बीजेपी कार्यालय में घुसा ,मचा हड़कंप

लखनऊ। लखनऊ में हजरतगंज स्थित भाजपा के प्रदेश कार्यालय के गेट नंबर –02 पर उस वक्त हड़कंप मच गया जब एक अधेड़ खुद को आग लगाकर शुक्रवार रात अंदर घुस गया। मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने आग की लपटों से घिरा देख जैसे तैसे काबू

पाया और अस्पताल भर्ती कराया। घटना की जानकारी पर डीसीपी मध्य अपर्णा रजत कौशिक, एडीसीपी राजेश श्रीवास्तव पहुंचे। बलराम नामक व्यक्ति ने मकान मालिक पर प्रताड़ना और ठाकुरगंज पुलिस पर सुनवाई न करने का आरोप लगाया है। बलराम की पत्नी सोनिया के मुताबिक वह ठाकुरगंज आम्रपाली योजना में मनीष पाल के यहां किराए पर रहती हैं। पति की छह माह पूर्व नौकरी छूट गई थी। वह किराए के नौ हजार रुपये बकाया थे। आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण 10 दिन पहले मकान मालिक को छह हजार रुपये का बंदोबस्त करके दिया गया था। मकान मालिक मनीष तीन हजार रुपये और लेने का दबाव बना रहे थे। वह अभद्रता करते थे। पुलिस से अभद्रता की शिकायत कर रुपये चुकता करने के लिए कुछ समय की मांग की पर सुनवाई नहीं हुई। शुक्रवार को पति घर से निकले। उन्होंने भाजपा कार्यालय गेट नंबर दो के पास आग लगाई और अंदर घुसने लगे। यह देख पुलिस कर्मियों ने उन्हें रोका और कंबल आदि डालकर आग पर काबू पाया। एडीसीपी ने बताया कि बलराम का इलाज चल रहा है और मामले की जांच हो रही है। पीड़ित का आरोप है कि वह शिकायत लेकर आम्रपाली चौकी प्रभारी के पास पहुंचा था, पर उन्होंने भगा दिया था। जांच के आदेश दिए गए हैं। दोष सिद्ध होने पर चौकी प्रभारी पर कार्रवाई की जाएगी।

मा० राज्यमन्त्री ने प्रयागराज, मिर्जापुर तथा वाराणसी मण्डल के उद्यान विभाग के अधिकारियों के साथ की विभागीय समीक्षा बैठक

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। मा0 राज्य मन्त्री (स्वतन्त्र प्रभार) उद्यान, कृषि विपणन, कृषि विदेश व्यापार, कृषि निर्यात उ0प्र0 श्री दिनेश प्रताप सिंह द्वारा सर्किट हाउस में प्रयागराज, मिर्जापुर तथा वाराणसी मण्डल के उद्यान विभाग के अधिकारियों के साथ विभागीय समीक्षा बैठक की। बैठक में मा0 मन्त्री जी ने विभागीय अधिकारियों को कृषकों की आय को बढ़ाने के लिए अधिक आय देने वाली औद्यानिक फसलों जैसे–ड्रैगन फ्रूट, स्ट्रावेरी, अंजीर एवं मशरूम की खेती का प्रचार–प्रसार किसानों के मध्य करने का निर्देश दिया। मा0 मन्त्री जी ने मशरूम की इकाई एवं मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने का निर्देश विभागीय अधिकारियों को दिया। निदेशक महोदय ने परम्परागत खेती के स्थान पर अधिक आय देने वाली औद्यानिक फसलों एवं खाद्य प्रसंस्करण यूनिट की स्थापना पर बल दिया। इस अवसर पर मशरूम की खेती करने वाले प्रतापगढ़ के गौरा ब्लाक के प्रगतिशील किसान श्री पन्ना लाल जायसवाल, स्ट्रावेरी की खेती

करने वाले मिर्जापुर के राजगढ़ ब्लाक के प्रगतिशील किसान श्री राधेश्याम सिंह एवं मधुमक्खी पालन में कीर्तिमान स्थापित करने वाले प्रयागराज के प्रगतिशील किसान श्री अरूण मिश्रा ने मा0 मन्त्री जी को अपने उत्पाद भेट किया तथा अपनी सफलता की कहानी भी बतायी।

भजन संध्या में किशोर चतुर्वेदी ने किया मंत्रमुग्ध

लखनऊ। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह के पुत्र नीरज सिंह के जन्मदिन के अवसर पर विपुल खंड गोमतीनगर के आईएमआरटी बिजनेस स्कूल में भजन संध्या का आयोजन किया गया। जिसमे लखनऊ के सुप्रसिद्ध गायक भजन सम्राट किशोर चतुर्वेदी ने भजनों की धारा बहा कर जनसमुदाय को मंत्र मुग्ध कर दिया। उन्होंने अच्युतम केशवम, हे पवन पुत्र हनुमान, प्रभु आपकी कृपा से, राम नाम सुख दाई जैसे भजनों की पावन गंगा बहाई। इसके बाद आईं प्रसिद्ध गायिका स्वाति रिजवी ने मीरा की प्रचलित रचना पायो जी मैंने राम रतन धन पायो और सबसे ऊंची प्रेम सगाई गा कर मंत्र मुग्ध कर दिया। उनके साथ तबले पर सुभाष शर्मा और विकास अवस्थी, आर्गन पर संजीव मेहरा, ढोलक पर राजकुमार और पैड पर कृष्ण स्वरूप ने शानदार संगत की। भजनों के दौरान किशोर चतुर्वेदी और स्वाति रिजवी को माननीय राजनाथ जी द्वारा अंगवस्त्र प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

आज ढहेगा ट्विन टावर, जमीदोज होने में लगेंगे 09 सेकेंड

लखनऊ। नोएडा के बहुचर्चित सुपरटेक ट्विन टॉवर को 28 अगस्त को गिरा दिया जाएगा। सुप्रीम कोर्ट ने इस टॉवर ने अवैध घोषित कर दिया था और इसे गिराने के निर्देश दे दिए। जांच रिपोर्ट में सामने आया है कि इस टॉवर को बनाने में नियमों की अनदेखी की गई और खुद नोएडा अथॉरिटी के अधिकारी भ्रष्टाचार में शामिल रहे। नियमों का उल्लंघन कर टॉवर का नक्शा पास कराने के मामले में नोएडा अथॉरिटी के 24 अधिकारियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। टॉवर को लेकर सोसाइटी में रहने वाले लोगों ने सबसे पहले ऑब्जेक्शन किया था। बिल्डिंग अवैध तरीके से बनाने को लेकर नोएडा अथॉरिटी से शिकायत की लेकिन अथॉरिटी ने सुनवाई नहीं की। सोसाइटी में जो दूसरी बिल्डिंग्स बनी हैं। उनमें एक दूसरे के बीच का स्पेस 16 मीटर से ज्यादा का है लेकिन ट्विन टॉवर के बीच का स्पेस 9 मीटर से भी कम है। जब बिल्डर ने लोगों को फ्लैट खरीदने के लिए दिखाया था तो वहां पर ओपन स्पेस दिखाया गया था, लेकिन 2008 के बाद बिल्डर ने टॉवर 01 से 15 तक पर कब्जा जमाना शुरू कर दिया जिसके खिलाफ आवाज उठाने के लिए फ्लैट खरीदने वालों ने कमेटी बनाई और बिल्डर–नोएडा अथॉरिटी के खिलाफ जंग छेड़ दी लेकिन बात नहीं बनीं। विरोध के बावजूद टॉवर्स का निर्माण होता रहा और बनक तैयार हो गया। 2004 में नोएडा अथॉरिटी ने सेक्टर 93 ए में ग्रुप हाउसिंग को प्लॉट–4आवंटित किया था। पहले तो प्लॉट न. 14 का नक्शा पास किया गया था यानि तब बिल्डिंग को 9वीं मंजिल तक ही बना सकते थे लेकिन इसके बाद 2006 में नोएडा अथॉरिटी ने प्रोजेक्ट में संशोधन कर 11 मंजिल का कर दिया, फिर तो साल दर साल अथॉरिटी इसकी ऊंचाई का नक्शा पास करती गई और बिल्डर मंजिलों पर मंजिल तानता चला गया। 2009 में बिल्डर्स ने प्लॉट नं 17 के लिए नक्शा पास कर लिया। इस प्लॉट पर 24 मंजिल के टॉवर का नक्शा पास किया गया। इसके बाद 2012 में नोएडा अथॉरिटी ने प्रोजेक्ट में और संशोधन किए, जिसके बाद इन टॉवर्स को 40 मंजिल तक पास कर दिया गया। अब इन टॉवर्स की ऊंचाई 121 मीटर हो गई है। इन टॉवर्स के अवैध निर्माण को लेकर फ्लैट खरीदने वालों की वेलफेयर एसोशिएशन आरडब्ल्यूए ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया क्योंकि नोएडा अथॉरिटी ने उनकी सुनवाई नहीं की थी। सुनवाई होते–होते मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया, कई सालों तक सुनवाई होती गई। सुप्रीम कोर्ट ने मामले में बिल्डर्स के साथ ही नोएडा अथॉरिटी के अधिकारियों को भी दोषी बनाया। अथॉरिटी के 24 अधिकारियों इस भ्रष्टाचार में लिप्त थे। उनके खिलाफ 4 अक्टूबर 2021 को मामला दर्ज किया गया। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले साल ही इस टॉवर को अवैध माना और गिराने का फैसला दे दिया, लेकिन टॉवर गिराने वाली कंपनी एडिफिस इंडीनियरिंग को एनओसी नहीं मिल पाई थी ,इसलिए इस टॉवर को अब 28 अगस्त यानि रविवार को गिराया जाएगा। इस गगनचुंबी ट्विनटॉवर को गिराने के लिए सारी तैयारियां पूरी हो गई हैं। नोएडा पुलिस ने भी ट्विनटॉवर को गिराने की व्यवस्था का निरीक्षण कर लिया है। इसे लेकर मॉक ड्रिल भी किया जा रहा है। इस टॉवर को 28 अगस्त को दोपहर 2.30 बजे गिरा दिया जाएगा। इसके लिए सेफ्टी के सारे इंतजाम कर लिए गए हैं। आसपास की सोसाइटी में रहने वाले लोंगो को सुरक्षित स्थान पर शिफ्ट किया जाएगा। लगभग 3000 गाड़ियां सोसाइटी के बाहर निकाली जाएंगी।

प्रयागराज में गंगा और यमुना नदियों में आई बाढ़ से किया बचाव तथा बोटों से किया गया राहत वितरण

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। गंगा और यमुना नदी में आई बाढ़ के वजह से जिले में कई स्थानों पर भयानक स्थिति उत्पन्न हो गयी है . जिससे लोग अपने घरों को छोड़कर राहत शिविर में जाने को मजबूर हो गये हैं. इसी सन्दर्भ में जिले में तैनात एन डी आर एफ कि टीम लगातार राहत बचाव और राहत सामग्री वितरण के कार्य में लगी हुयी है . 11 वाहिनी एन डी आर एफ के टीम कमांडर ब्रिजेश कुमार तिवारी ने बताया कि एन डी आर एफ कि टीम हरसंभव प्रयास कर रही है कि ज्यादा से ज्यादा लोग जो बाढ़ में अपने घरो में फंसे हुए हैं उनको सुरक्षित स्थानोंध्शहत शिविरों तक पहुँचाया जाये. टीम लगातार बाढ़ ग्रसित क्षेत्रों में जाके बता रही है कि अभी और दो– तीन दिनों तक जिले में पानी बढ़ने कि संभावना है इसलिए लोग अपने घरों को छोड़कर राहत शिविरोंध्सुरक्षित स्थानों पर चले जाये जिसमे एन डी आर एफ की टीम हर तरह से आपकी मदद के लिए तैयार है! आज इसी क्रम में जिला प्रशासन से मिली सुचना के अनुसार एन डी आर एफ के टीम कमांडर इंस्पेक्टर

ब्रिजेश कुमार तिवारी और उनकी टीम तथा सिविल डिफेंस के साथ मिलकर जिले के चांदपुर सलोरी स्थान से 06 लोगों का रेस्क्यू कर उनको सुरक्षित निकाल कर राहत शिविर में भेजने का कार्य किए! उसके उपरांत श्री योगेश कुमार मौर्य जी जिले के बाढ़ ग्रसित क्षेत्रों में एन डी आर एफ बोटों से बाढ़ राहत सामग्री वितरण का कार्य किये तथा अपने घरों को छोड़कर राहत शिविरों में जाने का आग्रह किये.

चिनहट में 2 चोर गिरफ्तार माल बरामद

लखनऊ। अपराध की रोकथाम और अपराधियों की धरपकड़ के लिए चलाई जा रही मुहिम में आज सरोजिनी नगर और चिनहट पुलिस को सफलता हाथ लगी है। चिनहट पुलिस ने दो शातिर चोरों ग्राम मीसा गोसाईगंज के रहने वाले अखिलेश और कंचनपुर मटियारी चिनहट के रहने वाले नन्हा उर्फ संदीप यादव को गिरफ्तार कर चोरी का सामान बरामद किया है। पुलिस के अनुसार गिरफ्तार किए गए अखिलेश और संदीप शातिर किस्म के चोर हैं और इन लोगों ने चोरी की कई वारदातों को अंजाम दिए जाने की बात कुबूल की है। पुलिस के अनुसार चोरी के सामान के साथ गिरफ्तार किए गए चोर बाराबंकी के सफेदाबाद चोरी का सामान बेचने के लिए जा रहे थे मुखबिर की सूचना पर इन दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके अलावा सरोजिनी नगर पुलिस के द्वारा चिल्लावा सरोजनी नगर के रहने वाले राम लखन नाम के एक युवक को गिरफ्तार किया गया है । राम लखन पर आरोप है कि उसने इसी महीने की 21 तारीख को एक 13 साल की किशोरी को बहला–फुसलाकर भगाया था 13 साल की किशोरी के परिजनों

मधुबनी पेंटिंग कार्यशाला का आयोजन संपन्न हुआ।

प्रयागराज। जिला शिक्षा एवम प्रशिक्षण संस्थान (डायट) प्रयागराज में मधुबनी पेंटिंग कार्यशाला उप शिक्षा निदेशक प्राचार्य डायट श्री राजेंद्र प्रताप जी के निर्देशन में श्रीमती निधि मिश्रा (प्रवक्ता– कला) के द्वारा में प्रेक्षागृह में आयोजित किया गया। कार्यशाला का आरंभ में वरिष्ठ प्रवक्ता श्री आलोक तिवारी एवं श्रीमती रत्ना यादव के दीप प्रज्वलन के बाद एवन प्रवक्ता श्रीमती निधि मिश्रा द्वारा वरिष्ठ प्रवक्ता

श्री आलोक तिवारी को बुके देकर स्वागत के उपरांत शुरुआत किया गया। कार्यशाला का संचालन श्री गोकरण शुक्ला किए। इस दौरान सभी प्रशिक्षुओ ने कागज पर अलग–अलग मधुबनी पेंटिंग बनाकर एवम ग्रुप में कपड़े, कुर्ते ,रुमाल इत्यादि पर भी मधुबनी चित्रकारी कर कार्यशाला में प्रस्तुत किए। मधुबनी पेंटिंग कार्यशाला को देखकर श्री आलोक तिवारी वरिष्ठ प्रवक्ता डायट, संयोजक श्रीमती निधि मिश्रा एवं प्रशिक्षुओं जिन्होंने कार्यशाला में प्रतिभाग किया, सभी की प्रशंशा करते हुए शुभकामनाएं दिए। कार्यशाला में मुख्य रूप से प्रवक्ता श्रीमती नीलम चतुर्वेदी, श्रीमती वर्तिका कुशवाहा, श्रीमती शबनम, श्रीमती अंबालिका मिश्रा, श्रीमती ऋचा राय, श्रीमती प्रतिभा सरोज, श्री विवेक त्रिपाठी, श्री राजेश कुमार पांडेय, श्री अमित सिंह, श्री शशांक सिंह, श्री वीरभ्रद यादव एवम नेट शिक्षक श्री मुकेश कुमार लोमड, श्री संजय यादव, श्री घनश्याम सिंह, सुश्री अंशिका सक्सेना समेत डी०एल०एड० 2021 बैच के समस्त प्रशिक्षु उपस्थित रहे।

रोडवेड बस की टक्कर से ई-रिक्शा पलटा एक की मौत, नौ घायल

लखनऊ। हरदोई रोड पर रहीमाबाद अदौरा मोड़ के पास शनिवार दोपहर तेज रफ्तार रोडवेज बस ने ओवरलोड ई–रिक्शा में टक्कर मार दी। टक्कर से ई–रिक्शा पलट गया। हादसे में 45 वर्षीय बिटाना की मौत हो गई। जबकि नौ लोग घायल हो गए। उधर, हादसे के बाद चालक बस लेकर मौके से फरार हो गया। सड़क हादसे मे घायल चार लोगों की हालत गंभीर बताई जा रही है।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, बस तेज गति से हरदोई रोड की ओर से आ रही थी। उधर, अदौरा गांव की लिंक रोड से खचाखच सवारियों से भरा एक ई–रिक्शा निकलकर मुख्य मार्ग पर आया। इस बीच तेज रफ्तार रोडवेज बस ने ई–रिक्शा में टक्कर मार दी। टक्कर से ई–रिक्शा बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया और उस पर सवार 10 लोग सड़क पर आ गए। चीख पुकार सुनकर दौड़े आस पड़ोस के लोगों ने ई–रिक्शा में फंसे घायलों को निकाला और अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां से पांच को क्षेत्र स्थित अस्पताल में भर्ती कर लिया गया। हादसे में घायल चार की हालत नाजुक देख उन्हें ट्रामा रेफर कर दिया गया। जबकि डाक्टरों ने एक महिला को मृत घोषित कर दिया। इंस्पेक्टर ने बताया कि मृत महिला की शिनाख्त कुंवरखेड़ा गांव निवासी बिटाना के रूप में हुई। इंस्पेक्टर के मुताबिक कुंवरखेड़ा गांव के रहने वाले 10 ग्रामीण रहीमाबाद इलाके में स्थित बाराही देवी मंदिर दर्शन के लिए जा रहे थे। इस बीच रोडवेज बस ने टक्कर मार दी। हादसे में घायल अन्य लोगों को इलाज चल रहा है। उधर, दुर्घटना के बाद चालक बस लेकर फरार हो गया। चालक की तलाश की जा रही है। तहरीर अभी नहीं मिली है। तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज किया जाएगा।

कृष्णा नगर पुलिस की गिरफ्त में आए वाणिज्य कर विभाग के 4 नकली अधिकारी

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ कमिश्नरेट की कृष्णा नगर पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। कृष्णा नगर पुलिस ने चार ऐसे ठगों को गिरफ्तार किया है जो अपने आप को वाणिज्य कर विभाग का अधिकारी बताकर लोगों से ठगी का कारोबार करते थे। कृष्णा नगर पुलिस ने आज प्रयागराज के रहने वाले रितेश कुमार, बंगला बाजार आशियाना के रहने वाले सूरज, रेलवे कॉलोनी आलमबाग के रहने वाले इंद्रजीत उर्फ श्रवण सिंह और कुरीयाना आलमबाग के रहने वाले विनय कुमार को गिरफ्तार कर इनके पास से एक स्विफ्ट डिजायर कार, दो नंबर प्लेट पीली धातु का एक बिस्कुट, विधानसभा सचिवालय का एक पास, एक नकली पिस्टल और वाणिज्य कर विभाग का परिचय पत्र बरामद किया है। पुलिस के अनुसार 2 दिन पहले मानस नगर कृष्णा नगर की रहने वाली रंजना वर्मा ने मुकदमा दर्ज कराया था कि उनकी चाय और समोसे की दुकान पर आकर इन लोगों ने अपने आप को वाणिज्य कर विभाग का अधिकारी बताकर उनसे न सिर्फ अभद्रता की थी बल्कि असलहा

दिखाकर उनसे मारपीट भी की थी। रंजना वर्मा की तहरीर पर दर्ज किए गए मुकदमे के आधार पर जब इन लोगों की गिरफ्तारी की गई तो पूछताछ में वाणिज्य कर विभाग का नाम बदनाम करने वाले इन नकली अधिकारियों ने पुलिस के सामने कुबूल किया कि ये लोग अपने आप को वाणिज्य कर विभाग का अधिकारी बताकर लोगों से ठगी करते थे और जब कोई इनका विरोध करता था तो उसे नकली पिस्तौल दिखाकर उससे वसूली करते थे । पुलिस के द्वारा गिरफ्तार किए गए ठगों का पुलिस आपराधिक इतिहास खंगाल रही है पुलिस ये भी पता लगाने का प्रयास कर रही है कि इन ठगों के द्वारा ठगी की कितनी वारदातों को अंजाम दिया जा चुका है।

महिला से छेड़छाड़ करने वाले रिक्शा चालक को गौतम पल्ली पुलिस ने पकड़ा

लखनऊ। लखनऊ कमिश्नरेट की गाजीपुर और गौतम पल्ली पुलिस की सफलता मिली है। गाजीपुर पुलिस ने तीन ऐसे लुटेरों को गिरफ्तार किया है जो वैसे तो फल और सब्जी का ठेला लगाते थे लेकिन इनका मुख्य काम लूटपाट की घटनाओं को अंजाम देना था। गाजीपुर पुलिस के द्वारा रुदौली अयोध्या के रहने वाले अल्ताफ उर्फ कल्लू, चिनहट के रहने वाले मोहम्मद हासिम और टेरा गांव डीवीडी के रहने वाले मोहम्मद सलमान को गिरफ्तार कर लूट की एक चेन, एक पर्स और लूट की वारदातों में इस्तेमाल की जाने वाली मोटरसाइकिल बरामद की है। तीन शातिर लुटेरों को गिरफ्तार करने वाली गाजीपुर पुलिस को डीसीपी कासिम आब्दी ने 10 हजार रुपए का इनाम देने का ऐलान भी किया है। डीसीपी कासिम आब्दी के अनुसार गिरफ्तार किए गए अल्ताफ के खिलाफ दो मुकदमे दर्ज हैं, हाशिम के खिलाफ एक और सलमान के खिलाफ दो मुकदमे दर्ज हैं उनका कहना है कि गिरफ्तार किए गए लोग वैसे तो फल और सब्जी का ठेला लगाते थे लेकिन ये लोग सुनसान इलाकों में महिलाओं से उनकी चेन पर्स लूट की वारदात को अंजाम देते थे। पुलिस ये पता लगाने का प्रयास कर रही है कि गिरफ्तार किए गए लुटेरों ने लूट की और कितनी वारदातों को अंजाम दिया है उनके गिरोह में और कितने लोग शामिल हैं । उधर गौतम पल्ली पुलिस ने महिला से छेड़छाड़ करने के आरोपी बहुखंडी हजरतगंज में स्थित झोपड़पट्टी में रहने वाले मूल रूप से हरदोई निवासी शिवदेश सक्सेना को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किया गया शिवदेश रिक्शा चालक है और उसने एक महिला से छेड़छाड़ की थी पीड़ित महिला के द्वारा अपने मोबाइल से छेड़छाड़ करने वाले रिक्शा चालक की तस्वीर खींच ली गई थी तस्वीर के आधार पर गौतम पल्ली पुलिस ने सीसीटीवी कैमरे की फुटेज की मदद से आज महिला से छेड़छाड़ करने के आरोपी शिवदेश को पकड़कर हवालात में पहुंचा दिया है।

शिक्षा विभाग में नियुक्ति के नाम पर 15 लाख ठगे

लखनऊ। शिक्षा विभाग में अध्यापक पद पर नियुक्ति कराने का दावा करते हुए सुभाष सिंह और उनकी पत्नी गीता सिंह ने 15 लाख रुपये की धोखाधड़ी की है। यह आरोप लगाते हुए मनोज सिंह ने आलमबाग कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराया है। आगरा ताजगंज निवासी मनोज सिंह के मुताबिक की ससुराल मानकनगर में हैं। वर्ष 2014 में मनोज सिंह को साले मनोज कुमार ने परिचित सुभाष सिंह के बारे में जानकारी दी। उसने बताया कि सुभाष सिंह की सपा सरकार में अच्छी पकड़ है। वह कई लोगों की नौकरी लगवा चुके हैं।

रुपये खर्च करने पर हम लोगों की नियुक्ति शिक्षा विभाग में कराने का भरोसा सुभाष सिंह और उसकी पत्नी गीता सिंह ने दिया है। साले से यह जानकारी मिलने पर मनोज सिंह आगरा से लखनऊ स्थित ससुराल आ गए। जहां उनकी मुलाकात सुभाष सिंह और गीता सिंह से हुई। बातचीत के दौरान पांच लाख रुपये प्रति व्यक्ति खर्चा आने का दावा किया।

भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करने में जुटे हैं मोदी : शंकर लाल लोधी

प्रयाग दर्पण संवाददाता

बाराबंकी। भाजपा प्रदेश मंत्री शंकर लाल लोधी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी भारतीय सनातन संस्कृति की गंगा को पुनर्जीवित करने में दिन रात जुटें हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीक काशी विश्वनाथ धाम और सोमनाथ धाम सहित कई पौराणिक स्थलों के पुनरोद्धार से भारतीय सांस्कृतिक चेतना उल्लासित है। प्रदेश मंत्री शनिवार को रामसनेही घाट स्थित पटेल पंचायती डिग्री कॉलेज में मोदीञ्च२० विषयक सेमिनार में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। कहा कि सैकड़ो वर्ष पूर्व चोरी कर विदेश ले जाए गए देवी–देवताओं की सैकड़ो मूर्तियों एवं पुरावशेष को मोदी देश मे वापस ला रहे हैं। उन्होंने कहा कि मोदी नेशन फर्स्ट के मूल मंत्र पर कार्य कर रहे हैं। तुष्टिकरण की जगह सबका साथ सबका विकास का सिद्धांत अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति के जीवन को खुशहाल बना रहा है। ईज ऑफ डूइंग एवं ईज ऑफ लिविंग को पटरी पर लाने के बाद प्रधानमंत्री मोदी गरीबों के लिए ईज ऑफ जस्टिस पर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पूर्व के प्रधानमंत्री सरकार बनाने के लिए मेहनत करते थे,जबकि मोदी राष्ट्र बनाने के लिए मेहनत कर रहे हैं। विशिष्ट अतिथि व राज्यमंत्री सतीश शर्मा ने कहा कि गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में मोदी का कार्यकाल अनुकरणीय है जबकि प्रधानमंत्री कार्यकाल की उनकी उपलब्धियां ऐतिहासिक हैं। कहा मोदी के नेतश्त्व में भारत आयातक की जगह निर्यातक देश की श्रेणी में शामिल हो रहा है। कहा कि मोदी करोड़ो युवाओं के आइकॉन बन गए हैं। जिला अध्यक्ष शशांक कुसुमेश ने अतिथियों का स्वागत किया। सन्चालन मण्डल अध्यक्ष विवेक तिवारी ने किया। विद्यालय के प्रबंधक जवाहर वर्मा ने आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर संदीप गुप्ता,अरविंद मौर्य,पवन सिंह रिंकू,विजय आनंद बाजपेई, सुशील जायसवाल,ब्रजेश रावत,अरुण मिश्रा सहित सैकड़ों विद्यार्थी मौजूद रहे।

अजगवा जंगल के पास बनेगा नया औद्योगिक क्षेत्र

बस्ती। भानपुर तहसील के अजगवा जंगल के पास 100 एकड़ में नया औद्योगिक क्षेत्र बनाया जाएगा। डीएम प्रियंका निरंजन ने जिला उद्योग बंधु की बैठक में उद्योग विभाग के उपायुक्त को मौके पर जाकर निरीक्षण कर रिपोर्ट देने के निर्देश दिए। दो माह पहले हुई उद्योग बंधु की बैठक में डीएम ने सभी एसडीएम को 80 से 100 एकड़ भूमि उपलब्ध कराने के निर्देश दिए थे ताकि एक नया औद्योगिक क्षेत्र बनाया जा सके। भानपुर के एसडीएम जीके झा ने बताया कि अजगवा जंगल के पास लगभग 200 बीघा भूमि उपलब्ध है। इसे प्रशासन सार्वजनिक उपयोग में ला सकता है।

उद्योग बंधु की बैठक में प्लॉस्टिक कॉम्पलेक्स इंडस्ट्रियल एरिया में जलनिकासी की समस्या के स्थायी समाधान के लिए सरयू नहर खंड चार के अधिशासी अभियंता राकेश कुमार गौतम ने बताया कि 3.13 करोड़ का प्रोजेक्ट तैयार किया गया है। लीड बैंक के मैनेजर अविनाश चंद्रा ने बताया कि सिकंदरपुर में भारतीय स्टेट बैंक की शाखा खोलने के लिए क्षेत्रीय प्रबंधक को पत्र भेजा गया है।

प्रदेश भर में लागू होगा डीएम का हरा चारा प्रबंधन नवाचार

प्रयाग दर्पण संवाददाता

बहराइच। तराई में बेसहारा मवेशियों के लिए हरा चारा प्रबंधन को डीएम डॉ. दिनेश चंद्र के नवाचार को प्रमुख सचिव का साथ मिला है। प्रमुख सचिव ने सभी जिलों में नेपियर घास की बोआई कराकर हरा चारा प्रबंधन का आदेश जारी किया है। यहीं नहीं घास बोआई से लेकर हार्वेस्टिंग तक की प्रक्रिया की फिल्म बनकर यूट्यूब पर अपलोड की जाएगी, ताकि दूसरे लोग भी ज्ञानार्जन कर नेपियर की खेती कर सकें। प्रदेश के आठ आकांक्षात्मक जिलों में बहराइच भी शामिल है। तराई को हरा चारा प्रबंधन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए डीएम डॉ. दिनेश चंद्र की ओर से नेपियर घास के संवर्द्धन को नवाचार किया जा रहा है। मुख्य सचिव की अध्यक्षता में 16 अगस्त को वीडियो कांफ्रेंसिंग में डीएम ने गोवंशों के हरे चारे की आपूर्ति पर प्रस्तुतिकरण दिया था। डीएम ने बताया था कि सूखा चारा, हरा चारा व दाना तीन हिस्से होते हैं। सूखे चारे में भूसा बहुतायत से पशुओं को खिलाया जाता है, जिसकी कीमत अधिक होती है। इसमें पोषण की मात्रा कम होती है। इस समस्या के समाधान के लिए मक्का, चरी, बरसीम, जई गोवंशों को खिलाया जाता है। यह चारे ऋतु आधारित होते हैं। वर्ष पर्यन्त हरे चारे की आपूर्ति के लिए संकर नैपियर घास गोवंशों के लिए वरदान साबित हो रहा है। मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र ने डीएम बहराइच के प्रस्तुतिकरण की प्रशंसा की थी।

संक्षिप्त खबरे

थू-थू कर जलने लगा बिजली के खंभे पर लगा तार

बस्ती। टिनिच के आमा बुध बाजार में अचानक बिजली के एक खंभे में आग भड़क उठी। खंभे से आग के शोले उठते देख आस–पास के लोग सहम गए। करीब में रहने वाले जितेंद्र अग्रहरि ने विद्युत उपकेंद्र हरदी को घटना की सूचना देकर बिजली आपूर्ति बंद करने को कहा। बिजली कटने के बाद लोगों ने राहत की सांस ली। लोगों का कहना था कि स्पार्किंग के बाद खंभे से जुड़े केबल में आग लग गई। खंभे में केबल ज्यादा होने के कारण आग तेज हो गई थी।

कार से टकराकर दुकान में घुसी ट्रैक्टर-ट्रॉली

बहराइच। बहराइच–लखनऊ हाईवे के रुकनापुर बाजार में शुक्रवार शाम ओवरटेक के प्रयास में दो ट्रैक्टर ट्रॉली और इनोवा की भिड़ंत हो गई। टक्कर से ट्रैक्टर–ट्रॉली होटल के बगल की दुकान में घुस गई। इससे लोगों में भगदड़ मच गई। गनीमत रही कि हादसे में कोई घायल नहीं हुआ। पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद ट्रैक्टर–ट्रॉली दुकान से बाहर कराई। फखरपुर थाने के रुकनापुर स्थित बाजार में शुक्रवार देर शाम बालू लदी ट्रैक्टर–ट्राली आगे जा रही ट्रॉली को ओवरटेक के प्रयास में भिड़ गईं। एक ट्रैक्टर–ट्राली सामने से आ रही कार को टक्कर देते हुए साइड के होटल में घुस गई। हादसे में चालक सहित सभी लोग बाल–बाल बचे। सूचना पाकर मौके पर पहुंचे एसएचओ वेद प्रकाश शर्मा ने ग्रामीणों की मदद से ट्राली को निकलवा कर कब्जे में लिया ।

सरकारी धन की होगी रिकवरी, डीएम ने दिया आदेश

बस्ती। रुधौली के ग्राम पंचायत पकड़ी सोएम के पूर्व प्रधान सचिव समेत तीन व्यक्तियों के खिलाफ सरकारी धन के गबन का मामला सामने आया है। मामले में क्षेत्र पंचायत सदस्य राजकुमार पांडेय ने डीएम से शिकायत की थी। जांच के लिए डीएम ने जिला कृषि अधिकारी व जिला समन्वयक स्वच्छ भारत मिशन को जांच अधिकारी नियुक्त किया था। जांच में सरकारी धन के दुरुपयोग का साबित पाया गया। डीएम प्रियंका निरंजन ने पूर्व ग्राम प्रधान गुजराती देवी से दुरुपयोग की गई दो लाख 10 हजार 589 धनराशि से आधा एक लाख 5 पांच हजार 294 रुपये रिकवरी का आदेश दिया है। इसी तरह कृष्णा सप्लायर एवं कांस्ट्रक्शन पर 39 हजार 647 रुपये की रिकवरी किए जाने तथा ग्राम सचिव जयकेश राव के वेतन से इनके कार्यकाल में 52 हजार की कुल धनराशि में से आधी 26 हजार रुपये किस्तों में वसूल किए जाने का आदेश दिया है।

मार्फिन तस्करी को गिरफ्तार कर भेजा जेल

jkeLugh?kkV]ckjkcdhA कोतवाली पुलिस ने एक मार्फिन तस्करी करने के लिए ले जा रहे आरोपी को जेल भेजा। कोतवाली की चौकी पुलिस ने पूरे चुरई नहर की पुलिया से एक युवक के पास तलाषी के दौरान 103 ग्राम मार्फिन बरामद किया। पुलिस को देखते ही युवकों ने भागने की कोषिष की। सिपाहियों ने पीछा कर युवक को धर दबोचा। षुक्रवार की षाम को पकड़े गए अब्दुल हक पुत्र समीउल्ला निवासी दर्षन नगर कोतवाली अयोध्या जनपद अयोध्या को चौकी पुलिस ने गिरफ्तार किया।

तलाषी के दौरान दोनों युवक के पास से 103 ग्राम मार्फीन बरामद की। पुलिस ने एनडीपीएस का मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया हैं। आज षनिवार को पुलिस ने 133 ग्राम मार्फीन मो० रजी पुत्र कमल गुफरान पुत्र हाफिज निवासी मोहल्ला सुफियान कस्बा रूदौली अयोध्या को दरियाबाद ओरब्रिज के पास से गिरफ्तार किया। मुकदमा पंजीकृत कर जेल भेजा गया हैं।

गोपिया बैराज पर 35 लाख की ब्राउन शुगर बरामद

बहराइच। मोतीपुर थाने की पुलिस ने गोपिया बैराज के पास एक नेपाली मादक पदार्थ तस्कर को धर दबोचा। उसके पास से ब्राउन शुगर बरामद की गई है। जिसकी अन्तरराष्ट्रीय बाजार में अनुमानित कीमत 35 लाख आंकी गई है। एसएसपी केशव कुमार चौधरी ने बताया कि मोतीपुर एसएचओ मुकेश कुमार सिंह को सूचना मिली कि नेपाली तस्कर की गतिविधियां देखी गई हैं। उन्होंने इसकी जानकारी अफसरों को दी। एएसपी ग्रामीण अशोक कुमार, सीओ मिहींपुरवा डा.जंग बहादुर यादव के पर्यवेक्षण में दरोगा विपिन कुमार सिंह, मुख्य सिपाही उमा शंकर त्रिपाठी, मुलायम यादव, रवि शंकर पांडेय ने तस्कर की तलाश शुरू की। गोपिया बैराज के पास एक नेपाली युवक को रोक कर तलाशी ली। उसके पास से 35 ग्राम ब्राउन शुगर बरामद की गई। गिरफ्तार तस्कर की पहचान नेपाल के बर्दिया जिले के गुलहरिया थाने के संतोषी टोला निवासी इताराम खत्री के रूप हुई। गिरफ्तार तस्कर के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है। पूछताछ के बाद आरोपी को जेल भेज दिया गया है।

23 वर्षीय युवक का शव मिला, 3 दिन पहले हो गया था लापता

गोण्डा। मोतीगंज थाना क्षेत्र के एक गांव के 23 वर्षीय युवक का शव शुक्रवार देर रात मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। युवक तीन दिन से घर से लापता था। मामला मोतीगंज थाना क्षेत्र का है। यहां के 23 वर्षीय रिंकू मिश्रा और गांव के ही एक अन्य परिवार के बीच कहासुनी हुई थी। परिजनों के मुताबिक, 23 तारीख को ही रिंकू घर से लापता हो गया था। 26 अगस्त की देर शाम उसका शव बेलावां (मोफिया) गांव के बाहर स्थित एक तालाब के पास मिला।

मुरझा रही फसल बचाने के लिए किसानों ने झोंकी ताकत

बस्ती। जिले में छिटपुट बारिश खरीफ की फसल को सूखे की मार से बचाने में नाकाम साबित हो रही है। करीब डेढ़ लाख हेक्टेयर खरीफ की फसल पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं। इसमें एक लाख 11 हजार हेक्टेयर में सिर्फ धान की फसल शामिल है। किसानों ने फसल को सूखे के असर से बचाने के लिए ताकत झोंक रखी है, लेकिन एक–एक दिन गुजरने के साथ उनका हौसला कम होता जा रहा है। लागत भी डेढ़ से दो गुना बढ़ती जा रही है। प्रशासन ने शासन को जिले को सूखाग्रस्त घोषित करने के लिए आकलन रिपोर्ट भेज दी है। सदर ब्लॉक के किसान चंद्रभूषण बताते हैं कि बारिश न होने से खेती की लागत दोगुना हो गई है। एक बीघे धान की रोपई में पांच हजार रुपये लागत आई है। बारिश न होने से हर पांचवें व छठवें दिन खेत में पानी भरना पड़ रहा है। प्रति बीघे करीब सात घंटे इंजन चलाना पड़ रहा है। 150 रुपये प्रतिघंटे की दर से एक बार पानी भरने में एक हजार पचास रुपये की लागत आ रही है। उन्होंने बताया कि अब तक खेत में चार से पांच बार पानी भरा जा चुका है। इसमें करीब 5200 रुपये सिंचाई में लागत लग चुकी है। यानी प्रति बीघे अब तक किसानों को 10 हजार रुपये से ज्यादा खर्च करना पड़ा है। अगर बारिश नहीं होती है तो इसमें हर छठवें दिन एक हजार 50 रुपये लागत बढ़ती जाएगी। शासन को बस्ती मंडल के संयुक्त कृषि निदेशक की तरफ से भेजी गई रिपोर्ट के मुताबिक जिले में पिछले वर्ष की तुलना में आधे से भी कम बारिश हुई है। पिछले वर्ष अनुमानित सामान्य वर्षा 826.76 मिली मीटर की जगह 758.30 मिमी बारिश हुई थी।

मिनी शांतिकुंज के प्रज्ञा भवन का शुरू हुआ निर्माण कार्य

अयोध्या। अयोध्या के रामकोट स्थित गायत्री शक्तिपीठ को मिनी शांतिकुंज बनाने का काम शुरू हो गया है। गायत्री शक्तिपीठ में पांच मंजिला भवन का निर्माण कार्य शुरू हो गया है। भवन के लिए नींव का काम तेजी से चल रहा है। श्री राम जन्मभूमि परिसर में बन रहे श्री राम मंदिर के साथ ही 2024 तक भवन निर्माण का कार्य पूरा कर लिया जाएगा। अखिल विश्व गायत्री परिवार अयोध्या शक्तिपीठ को मिनी शांतिकुंज के रूप में विकसित करना चाहता है। जिसके तहत मंदिर का निर्माण चल रहा है। मंदिर का निर्माण करीब 24 करोड़ की लागत से किया जाएगा। 4 मई 2022 को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ चिन्मय पांड्या ने भवन निर्माण के लिए भूमि पूजन किया था। भवन निर्माण करा रहे सिविल इंजिनियर राम अवतार दत्त ने बताया कि गायत्री शक्तिपीठ में बन रहे बहुमंजिला इमारत की लंबाई 106 फीट और चौड़ाई 70 फिट होगी। भवन का निर्माण 40 फीट गहराई से शुरू होगा। यह भवन 140 पिलरों पर खड़ा होगा। भवन पूरी तरह से भूकंप रोधी बनाया जा रहा है। भवन का निर्माण 2024 तक पूरा कर लिया जाएगा। राम मंदिर निर्माण के साथ ही इसका भी निर्माण कार्य पूरा कर लिया जाएगा। सिविल इंजीनियर राम अवतार दत्त ने बताया कि भवन का निर्माण शांतिकुंज हरिद्वार के देखरेख में किया जा रहा है। अयोध्या जोन के जोनल प्रभारी देश बंधु तिवारी ने बताया कि गायत्री परिवार के संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने देश में 24 शक्तिपीठों की स्थापना की थी। इसमें अयोध्या का पहली शक्तिपीठ थी।

पुलिस उपमहानिरीक्षक ने सरयू नदी तट का किया निरीक्षण

गोण्डा। मंडल के पुलिस उपमहानिरीक्षक उपेंद्र अग्रवाल ने आज कर्नलगंज स्थित सरयू नदी तट का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पुलिस उपमहानिरीक्षक ने सरयू नदी तट पर आने वाले श्रद्धालुओं और लोगों की सुरक्षा व्यवस्था की हकीकत को परखते हुए वर्तमान तैयारियों का जायजा लिया। आगामी पर्व कजरी तीज के अवसर पर आयोजित होने वाले कांवड़ मेले को लेकर पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों के द्वारा लगातार क्षेत्रों का निरीक्षण और तैयारियों का जायजा लिया जा रहा है। जिसके क्रम में कर्नलगंज नगर के सरयू नदी के तट पर कजरी तीज के 1 दिन पूर्व लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं का जमावड़ा तट पर मौजूद होगा, तथा सभी श्रद्धालु नदी में स्नान कर पूजा पाठ करके कांवर में सरयू नदी का जल लेकर क्षेत्र के विभिन्न शिव मंदिरों की ओर प्रस्थान करेंगे। जिसको लेकर कांवड़ियों की सुरक्षा के लिए पुलिस विभाग पूरी तत्परता के साथ जुटा हुआ है।

इंसानियत का पैगाम आम हो तो मुल्क की तरक्की को कोई नही रोक सकता : स्वामी मुरारी

बाराबंकी। वतन से मोहब्बत ईमान का हिस्सा है जब दिलों में मोहब्बत परवान चढ़ेगी इंसानियत का पैगाम आम किया जाएगा तो दुनिया की कोई ताकत समाज और मुल्क की तरक्की को रोक नहीं सकती। उक्त विचार आजादी का अमश्त महोत्सव के अवसर पर स्थानीय गांधी भवन में उत्तर प्रदेश उर्दू एकेडमी की जानिब से आयोजित सद्भावना मुशायरे के मुख्य अतिथि स्वामी मुरारी दास ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि समाज में उथल–पुथल असमानता नैतिकता का पतन शीश पर है। इससे देश को बचाने का एक ही इलाज है और वो मोहब्बत व इंसानियत है। जोहर कानपुरी की अध्यक्षता और वासिफ फारुकी के संचालन में आयोजित इस सद्भावना मुशायरे में स्वागत भाषण आयोजक और उत्तर प्रदेश उर्दू एकेडमी के सदस्य राजा कासिम ने प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि सुधीर तिवारी, प्रशांत कुमार मिश्रा, संतोष सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए, इस अवसर पर उर्दू पत्रकारिता में योगदान के लिए वरिष्ठ पत्रकार हसमत उल्ला, सामाजिक सेवा के लिए कारवाने इंसानियत के अध्यक्ष तारिक जिलानी, जफर हयात एडवोकेट, प्रशांत कुमार मिश्रा, सुधीर तिवारी, संतोष सिंह, रजा रिजवी, व जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष नरेंद्र वर्मा को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश उर्दू एकेडमी की तरफ से तमाम कवियों और शायरों को गुलदस्ता स्मशति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। गुले सबा, ने देश भक्ति का गीत गाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। शायरों में जोहर

आईटीआई में अप्रेंटिंसशिप मेला 31 अगस्त को

ckjkcdhA 31 अगस्त 2022 को समय प्रातः 10 बजे से संस्थान परिसर में अप्रेंटिंसषिप मेला आयोजित किया जा रहा है। उक्त जानकारी देते हुये नोडल राजकीय औद्योगिक प्रषिक्षण संस्थान, बाराबंकी के प्रधानाचार्य दीपक कुमार यादव ने बताया कि उक्त अप्रेंटिंसषिप मेले में अप्रेंटिसषिप प्रषिक्षण हेतु जनपदीय कंपनियो द्वारा साक्षात्कार के माध्यम से आई टी आई प्रमाणपत्र धारको का चयन अप्रेंटिसषिप प्रषिक्षण हेतु किया जाएगा। मेले में ट्रेड–फिटर, इलेक्ट्रीषियन, मषीनिस्ट, वेल्डर टर्नर इत्यादि के पास आउट अभ्यर्थी प्रतिभाग कर सकते हैं। प्रतिभाग करने हेतु अभ्यर्थी को भारत सरकार के वेब पोर्टल www.apprenticeshipindia.gov.in पर पंजीकरण कराना आवष्यक होगा। चयनित अभ्यर्थियों को उनकी अप्रेंटिसषिप प्रषिक्षण अवधि के दौरान संबंधित कंपनी द्वारा स्टाइपेंड के रूप में न्यूनतम रुपये 7,000 माह प्रदान किये जाएगें।

चार अभियुक्तों गिरफ्तार, कब्जे से लूट के मोबाइल, तमंचा व कारतूस बरामद

बाराबंकी। थाना रामसनेही घाट पुलिस द्वारा चार शातिर अभियुक्तों को किया गया गिरफ्तार, कब्जे से लूट के 02 अदद मोबाइल फोन, एक तमंचा मय दो अदद जिन्दा कारतूस बरामद। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत आज थाना रामसनेही घाट पुलिस टीम द्वारा अभियुक्तगण 1. रामबाबू वर्मा उर्फ रेन्चो पुत्र स्व० हरिश्चन्द वर्मा निवासी लालगंज थाना दरियाबाद जनपद बाराबंकी 2. श्रवण कुमार रावत पुत्र राममिलन रावत निवासी सुरजवापुर मजरे तेलमा थाना दरियाबाद जनपद बाराबंकी 3. सुजीत वर्मा पुत्र राजेश वर्मा निवासी डीह अशोकपुर मजरे चाचू सराय थाना रामनगर जनपद बाराबंकी 4. राकेश कुमार वर्मा पुत्र रामनरेश निवासी किला बेलहरी थाना दरियाबाद जनपद बाराबंकी को ओवर ब्रिज के नीचे से गिरफ्तार किया गया। अभियुक्तगण के कब्जे लूट के दो अदद मोबाइल फोन, एक अदद अवैध तमंचा 315 बोर मय दो अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर बरामद किया गया। इस सम्बन्ध में थाना रामसनेही घाट पर मु०अ०सं०–477/2022 धारा–41/411/413 भादवि व मु०अ०सं० 478/2022 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट पंजीकृत किया गया। पूछताछ से प्रकाश में आया कि अभियुक्तगण द्वारा माइक्रोमैक्स मोबाइल फोन करीब 3–4 दिन पहले थाना रामसनेही घाट क्षेत्रान्तर्गत एक लड़के से व एक अदद ओप्पो मोबाइल फोन करीब 4–5 दिन पहले दरियाबाद कस्बे के बाहर महमदाबाद रोड से छीना था।

महिला गुजारा भत्ता न बने पुरुष के शोषण का हथियार पतियों को परजीवी, नहीं आत्मनिर्भर बनाए

प्रयाग दर्पण संवाददाता

बाराबंकी। आज तमाम ऐसे कानून है जो महिला की सुरक्षा के लिए बनाए गए हैं। लेकिन महिलाओं की सुरक्षा के नाम पर परिवार बर्बाद करने वाले अनैतिक व असामाजिक अधिकार अब स्त्री को दिए जा रहे हैं। जिसकी कल्पना एक आम पुरुष ने कभी नहीं की होती है। उक्त विचार पुरुषार्थ सेवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में कपिल मोहन ने महिला गुजारा भत्ता न बनने पुरुष शोषण का हथियार, पतियों को परजीवी नहीं आत्मनिर्भर बनाए, विषयों पर विस्तार से बात करते हुए कही। उन्होंने कहा की पत्नी की इच्छा के विरुद्ध उससे घर में काम करने को कहना, पत्नी को नौकरानी मानने को बराबर प्रचारित किया जाता है और इसको पत्नी के प्रति क्रूरता बताया जाना, सास ससुर की सेवा करना बहू का कानूनी कर्तव्य नही, शादी के बाद अगर पत्नी मायके में रहना चाहती है तो उसको ससुराल में रहने के लिए बाध नहीं किया जाना, मायके में रहने वाली पत्नी को मकान का किराया देना, पत्नी को पति की जागीर समझना न समक्षना, पत्नि को गुजारा भत्ता देना, पत्नी का किसी के भी साथ रहने पर पति को पूरा खर्च उठाना, पत्नी अगर पति से अलग रह रही है तो भी पति को गुजारा भत्ता देना, अगर कम कमा रही है तो इक्वल टू हसबैंड स्टेटस का फार्मूला लगाकर गुजारा भत्ता पति से दिलवाया जाता है। कुल मिलाकर पुरुष को विवाह करने का दोषी करार दिया जाता है। विवाह बंधन के नाम पर जबरन गुलामी कराई जा रही है। जबकि स्त्री को पुरुष के बराबर शिक्षा, नौकरी व संपत्ति का अधिकार है, जिसमें उन्होंने तरक्की भी की है लेकिन आज उन्हीं वाक्य के दायित्व से मुक्त दिलाकर यौव स्वच्छंन्दता का अनैतिक कानून अधिकार देकर समाज को दूषित किया जा रहा है। दहेज प्रताड़ना के 99 प्रतिषत झूठे आरोप लगाकर पति से गुजारा भत्ता के नाम पर जबरन वसूली लीगल एक्सटॉर्शन जेल भेजने की हद तक की जा रही है। शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ होने के बाद भी उनको आत्मनिर्भर होने के लिए प्रेरित नहीं किया जा रहा है। बल्कि उन्हें न्यायालय द्वारा आजीवन परजीवी बनाया जा रहा है। इसी लीगल एक्सटॉर्शन के विरुद्ध अब देश के पुरुष संगठन एकजुट होकर एक स्थाई गुजारा भत्ता के विरुद्ध देशभर में आवाज बुलंद कर रहे है और अपनी समस्याएं व समाधान के लिए सरकार व न्यायपालिका को ज्ञापन पेश करेंगे। आज 27 अगस्त 2022 को पूरे भारत में एक महा अभियान के तहत देशभर में 40 से अधिक पुरुष संगठन एकजुट होकर एक साथ एक समय में प्रेस वार्ता करके न्याय की गुहार लगा रहे है। इस अवसर पर अनिल अनाड़ी विपिन त्यागी, षैलेन्द्र श्रीवास एवं यक्ष मौजूद रहे।

भरण-पोषण करने में असमर्थ महिलाओ पर लागू था कानून

स्त्री को कमजोर मानकर उसको समाज की मुख्यधारा में बराबरी पर लाने के लिए संविधान के अनुच्छेद 15(3) में प्रावधान बनाने का अधिकार दिया गया है ना कि पुरुष वर्ग को प्रताड़ित करने का, उसके वसूली आगाही के लिए सन 1973 में जब सीआरसीपी 125 के तहत पत्नी बच्चों का माता–पिता के भरण पोषण हेतु यह कानून लाया गया था तो उस समय भी सिर्फ उन पत्नियों पर लागू था जो अपना भरण–पोषण करने में असमर्थ थी।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक, प्रकाशक स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य) द्वारा रमा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1–ए, बेली रोड, नया कटरा, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर, 1269/1073 मां श्री आश्रम, मालवीय नगर, बाबा जी का बाग, प्रयागराज से प्रकाशित।

–: संस्थापक :–

स्व0 श्रीकांत शुक्ल उर्फ स्वामी कांतेश्वरानंद भारती काली बाबा

संपादक

स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य)

मोबाइल नंबर 9450475366

Email

prayagdarpan@gmail.com

R.N.I. NO.UPHIN/2014/59804

इस अंक में प्रकाशित समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदाई तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन होंगे।